तत्त्वार्थसूत्र-जैनागमसमन्वय

समन्वयकर्ता

साहित्यरत्न, जैनधर्मदिवाकर

उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज (पंजाबी)

प्रकाशिका

श्रीमती चन्द्रापति जी

सुपुत्री लाला शेरसिंह जी जैन

रोहतक

प्रथमावृत्ति ५००] फरवरी १९३६ [वीर सवत् २४६१

श्रीमती चन्द्रापति जी सुपुत्री लाला शेरसिंह जी जैन

चित्रपरिचय

पुस्तक के आरम्भ मे जिन देवी जी का चित्र दिया गया है वह रोहतकनिवासी श्रीयुत लाला शेरसिंह जी की सुपुत्री हैं। इनका नाम चन्द्रापति है। इनका जन्म विक्रम स० १९६५ और विवाहसस्कार १९७६ मे हुआ था। परन्तु दुर्दैववशात् विवाहसस्कार के बाद कुछ ही महीनों मे इनके होनहार पतिदेव का स्वर्गवास हो गया।

बहुत छोटी अवस्था मे, वस्तुतः कुमारावस्था मे ही, विधवा होने पर भी माता पिता के सद्व्यवहार और साधुजनों के सत्सग से देवी चन्द्रापति जी की प्रतिदिन कल्याणकारी धर्म की ओर रुचि बढने लगी और आज तक वह निरन्तर बढती ही चली जारही है।

बहन चन्द्रापति जी धर्मध्यान में निरन्तर मग्न रहकर जहा अपने सतीत्व का सरक्षण कर रही हैं वहाँ अपने द्रव्य को

भी एकमात्र धार्मिक कार्यों मे ही व्यय कर उसका सदुपयोग कर रही हैं। गोशाला, विद्याशाला और धर्मपुस्तकप्रचार आदि अनेक शुभ कार्यों मे आज तक इन्हों ने अनुमानत सोलह सत्तरह हजार रुपया दान दिया है और प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशनार्थ भी जो कुछ द्रव्य व्यय हुआ है वह सब इन्हीं देवी जी की उदारता और गुणप्रियता का फल है। अन्यान्य धनाढ्य जैन महिलाओं को भी बहन चन्द्रापति जी की दानपरायणता का अनुकरण करना चाहिये। बाई चन्द्रापति जी निस्सन्देह वर्तमान समय की जैन बाल विधवाओं में एक आदर्श देवी है।

FOREWORD

The Upādhyāya, Srī Ātmā Rām jī is a well-known monk of the Sthānakavāsī Sect Ever since his initiation into the order he has devoted himself to a study of Jaina Philosophy and literature He has done a useful work by translating the following Sūtras into Hindi —

1 The Anuyogadvāra
2 The Āvasyaka
3 The Dasāsrutaskandha
4 The Dasavaikālika
5 The Uttarādhyayana

Besides these he compiled from the Sūtras an original treatise entitled *Jaina-tattva-kalikā-vikāsa* where the original texts have been translated into Hindi and explained fully

For use in Jain Schools the Upādhyāya compiled a set of readers wherein he has combined sacred and secular instruction.

Upādhyāya Ātmā Rām jī is a thorough scholar of Jaina literature not only on the traditional lines, but on the comparative lines also. Some years ago he published a valuable paper in the Hindi monthly "Saraswati" wherein he compared a number of passages from the Jaina Sūtras with similar ones found in the Buddhist literature. The present volume i.e., the *Tattvārthasūtra Jaināgama Samanvaya* is another work of this kind. Here, of course, the material compared comes from the Jaina sources only. The *Tattvārtha* or the *Tattvārthādhigama Sūtra* (also called the *Mokṣa Śāstra*) is the earliest extant Jaina work in Sanskrit and is composed in the Sūtra style. It is regarded authoritative both by the Digambaras and the Svetāmbaras. Its

author Umāsvāti (according to the Digambaras, Umāsvāmī) lived about 2,000 years ago. This Sūtra was one of the most widely and deeply studied works in the past as the number of commentaries on it (about forty) shows. Leaving aside the question whether the *Āgamas* are older or later than the *Tattvārtha Sūtra*, Upādhyāya Ātmā Rām ji has been able to find out from the *Āgamas* passages corresponding to all the individual sūtras of the *Tattvārtha*. For his comparison he has chosen the Digambara recension of the *Tattvārtha*, perhaps to indicate that, so far as the fundamental principles are concerned there is not much difference of opinion between the Digambaras and the Śvetāmbaras. The passages quoted from the *Agamas* often have a striking similarity with the sutras of the *Tattvārtha* both in words and meaning.

It hardly needs to be added that the present

work of Upādhyāya Ātmā Rām jī is a highly valuable apparatus for Research connected with Jaina philosophy and literature, and as such it will be fully appreciated by scholars working in that direction

Oriental College,
LAHORE

BANARSI DAS JAIN

प्रस्तावना

इस अनादि ससार-चक्र में परिभ्रमण करते हुए आत्मा को मनुष्य जन्म और आर्यत्व भाव की प्राप्ति हो जाने पर भी श्रुतिधर्म की प्राप्ति दुर्लभ ही है। इस के अतिरिक्त सम्यग्दर्शन भी सम्यक्श्रुत पर ही निर्भर है। अतएव उक्त सर्व साधन मिल जाने पर भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिये सम्यक्श्रुत का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि उक्त प्राप्ति के लिये अध्ययन करने योग्य कौन २ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनको सम्यक्श्रुत का प्रतिपादक कहा जाए। इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि जिन ग्रथों के प्रणेता सर्वज्ञ अथवा सर्वज्ञसदृश महानुभाव हैं वह आगम ही अध्ययन करने योग्य हैं। क्योंकि जिसका वक्ता आप्त (सर्वज्ञ) होता है वही आगम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में कारण होता है।

यद्यपि सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति क्षायिक, क्षायोपशमिक

अथवा औपशमिक भाव पर निर्भर है तथापि सम्यक्श्रुत को उसकी उत्पत्ति में कारण माना गया है। अतएव सिद्ध हुआ कि सम्यक्श्रुत का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

श्वेताम्बर—स्थानकवासी सम्प्रदाय के अनुसार सम्यक्श्रुत का प्रतिपादन करने वाले ३२ आगम ही प्रमाणकोटि मे माने जाते है। वे निम्न प्रकार है —

११ अङ्ग, १२ उपाङ्ग, ४ मूल, ४ छेद और ३२ वा आवश्यक सूत्र।

इनके अतिरिक्त इन आगमो के आधार से एव इनके अविरुद्ध बने हुए ग्रथो को न मानने मे भी उक्त सम्प्रदाय आग्रहशील नही है।

उक्त शास्त्रो के विषय मे विशेष परिचय प्राप्त करने के लिये इस विषय के जैन ऐतिहासिक ग्रथ देखने चाहिये।

अनेक महानुभावो ने उक्त आगमो के आधार पर अनेक प्रकार के ग्रन्थो की रचना की है, जिनका अध्ययन जैन समाज मे अत्यन्त आदर और पूज्य भाव से किया जा रहा

है । इन लेखकों में से भी जिन महानुभावो ने आगमों में से आवश्यक विषयो का सग्रह कर जनता का परमोपकार किया है उनको अत्यन्त पूज्य दृष्टि से देखा जाता है और उनके ग्रथ जैन समाज में अत्यन्त आदरणीय समझे जाते है। वर्तमान ग्रथ तत्त्वार्थसूत्र (मोक्ष शास्त्र) की गणना उन्ही आदरणीय ग्रथों मे है । इस ग्रथ मे इसके रचयिता ने आगमो मे से आवश्यक विषयो का सग्रह कर जनता का परमोपकार किया है । इसमे तत्त्वो का सग्रह समयोपयोगी तथा सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है । इसके कर्ता ने आगमो की मूल भाषा अर्द्धमागधी से विषयों का सग्रह कर उनको सस्कृत भाषा के सूत्रों मे प्रगट किया है । इससे जान पड़ता है कि उस समय सस्कृत भाषा मे सूत्र रूप मे लिखने की प्रथा विद्वानो मे आदर पाने लगी थी । सूत्रकार ने अपने ग्रथ मे जैन तत्त्वो का दिग्दर्शन विद्वानो के भावानुसार सस्कृत भाषा मे किया । प्रायः विद्वानो का मत है कि तत्त्वार्थसूत्र के रचयिता का समय विक्रम की प्रथम शताब्दी है । सस्कृत

भाषा उस समय विकसित हो रही थी। जिस प्रकार इस ग्रंथ के कर्ता ने इस सग्रह में अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है, उसी प्रकार अनेक विद्वानों ने इसके ऊपर भिन्न २ टीकाओं की रचना करके जैन तत्त्वों का महत्त्व प्रगट किया है। और इस ग्रंथ को आगम के समान ही प्रमाण कोटि मे स्थान देकर इसके महत्त्व को बहुत अधिक बढा दिया है।

पूज्यपाद उमास्वाति जी महाराज ने जैन तत्त्वों को आगमों से सग्रह कर जैन और जैनेतर जनता का बडा भारी उपकार किया है।

यद्यपि इस सूत्र को सग्रह ही माना गया है, किन्तु यह ग्रन्थ सूत्रकार की काल्पनिक रचना नहीं है। कारण कि इस ग्रन्थ में जिन २ विषयों का सग्रह किया गया है, उन सब का आगमों में स्पष्ट रूप से वर्णन है। अत स्वाध्यायप्रेमियों को योग्य है कि वह भक्ति और श्रद्धापूर्वक आगम तथा सूत्र दोनों का ही स्वाध्याय करें, जिससे भेद भाव मिटकर जैन

समाज उन्नति के शिखर पर पहुच जावे।

अब रहा यह प्रश्न कि क्या यह ग्रन्थ वास्तव में संग्रह ग्रथ है ? सो आगमों का स्वाध्याय करने वाले तो इस ग्रन्थ को आगमों से संग्रह किया हुआ मानते ही हैं। इसके अतिरिक्त आचार्यवर्य हेमचन्द्रसूरि ने अपने बनाये हुए 'सिद्धहेम-शब्दानुशासन' नाम के व्याकरण में पूज्यपाद उमास्वाति जी महाराज को संग्रहकर्ताओं में उत्कृष्ट संग्रहकर्ता माना है। जैसा कि उन्होंने उक्त ग्रन्थ की स्वोपज्ञवृत्ति मे कहा है।

उत्कृष्टेऽनूपेन २। २। ३९

उत्कृष्टार्थादनूपाभ्या युक्ताद्द्वितीया स्यात्। अनुसिद्धसेन कवय। उपोमास्वातिं संग्रहीतार ॥३९॥

स्वोपज्ञ बृहद्वृत्ति मे भी उक्त आचार्यवर्य ने उक्त सूत्र का व्याख्या में कहा है —

"उत्कृष्टेऽर्थे वर्तमानात् अनूपाभ्या युक्ताद् गौणान्नाम्नो द्वितीया भवति। अनुसिद्धसेन कवय। अनुमल्लवादिन तार्किका। उपोमास्वातिं संग्रहीतार। उपजिनभद्रक्षमाश्रमण

व्याख्यातार । तस्मादन्ये हीना इत्यर्थ ॥३६॥"

आचार्य हेमचन्द्र का समय विक्रम का १२ वी शताब्दी सभी विद्वानों को मान्य है। आपके कथन से यह भली प्रकार सिद्ध हो जाता है कि पूज्यपाद उमास्वाति संग्रह करने वालो मे सबसे बढकर संग्रह करने वाले माने गये है। आगमो से संग्रह किये जाने से यह ग्रन्थ भी संग्रहग्रथ माना गया है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि भगवान् उमास्वाति ने संग्रह किस रूप मे किया है? इसका उत्तर यह है कि इस ग्रन्थ मे दो प्रकार से संग्रह किया गया है। कही पर तो शब्दश संग्रह है अर्थात् आगम के शब्दो को संस्कृत रूप दे दिया गया है और कही पर अर्थसंग्रह है अर्थात् आगम के अर्थ को लक्ष्य मे रखकर सूत्र की रचना की गई है। कही २ पर आगम मे आये हुए विस्तृत विषयों को संक्षेप रूप से वर्णन किया गया है।

आगमो मे किस प्रकार इस शास्त्र का उद्धार किया गया

है ? इस विषय को स्पष्ट करने के लिये ही वर्तमान ग्रन्थ विद्वत्समाज के सम्मुख रखा जा रहा है । इसका यह भी उद्देश्य है कि विद्वान् लोग आगमो के स्वाध्याय का लाभ उठा सकें ।

इस ग्रथ में सूत्रो का आगमो से समन्वय किया गया है । इसमे पहले तत्त्वार्थसूत्र का सूत्र, फिर आगम प्रमाण, उसके पश्चात् उस आगम पाठ की सस्कृत छाया और अन्त मे आगम पाठ की भाषा टीका दी गई है, जिससे पाठकवर्ग आगम और सूत्र के शब्द और अर्थों का भली प्रकार ज्ञान प्राप्त कर सके ।

सूत्रों के सामान्य अर्थ इस ग्रथ के अत में परिशिष्ट न० २ मे दे दिये गये है ।

यहा यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस ग्रन्थ मे दिये हुए आगम प्रमाण आगमोद्धार समिति द्वारा मुद्रित हुए आगमों से दिये गये हैं ।

पाठको के सम्मुख सूत्र के पाठ से आगमो के पाठ का

यह समन्वय उपस्थित किया जाता है। यदि आगम ग्रंथ के कोई विद्वान् समन्वय में कहीं त्रुटि समझें तो उसको स्वय समन्वय कर पूर्ण पाठ से अवगत करने की कृपा करे। क्योंकि 'सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृता ।'

यह ग्रन्थ इतना महत्त्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति के स्वाध्याय करने योग्य है। वास्तव मे यह तत्त्वार्थसूत्र आगम ग्रन्थों की कुञ्जी है। अत जिन २ विद्यालयों, हाई स्कूलो और कालेजों मे तत्त्वार्थसूत्र पाठ्य क्रम मे नियत किया हुआ है उन २ सस्थाओ के अध्यक्षों को योग्य है कि वह सूत्रों के साथ ही साथ बालको को आगम के समन्वय पाठो का भी अध्ययन करावे, जिससे उन बालकों को आगमो का भी भली भाति ज्ञान हो जावे।

कुछ लोग यह शका भी कर सकते है कि 'संभव है कि श्वेताम्बर आगमो में तत्त्वार्थसूत्र के इन सूत्रो की ही व्याख्या की गई हो।' सो इस विषय मे यह बात स्मरण रखने की है कि जैन इतिहास के अन्वेषण से यह बात सिद्ध हो चुकी है

कि आगम ग्रन्थों का अस्तित्व उमास्वाति जी महाराज से भी पहले था। इसके अतिरिक्त तत्त्वार्थसूत्र और जैन आगमों का अध्ययन करने से यह स्वत ही प्रगट हो जावेगा कि कौन किस का अनुकरण है। अतएव सिद्ध हुआ कि आगमों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये, जिस से सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र की प्राप्ति होने पर निर्वाणपद की प्राप्ति हो सके। अन्त में आगमाभ्यासी सज्जनो की सेवा मे प्रार्थना है कि वे कहीं पर यदि कोई त्रुटि देखें या किसी स्थल में आगमपाठों के साथ किये गये समन्वय में कुछ न्यूनता देखें और उन की दृष्टि मे कोई ऐसा आगम पाठ हो जिससे कि उस कमी की पूर्ति हो सके तो वे महानुभाव कृपा करके हमें अवश्य सूचित करे ताकि इस ग्रन्थ की आगामी आवृत्ति म उसका प्रबन्ध किया जावे। आशा है सज्जन पुरुष हमारे इस विनम्र निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे।

श्री श्री श्री १००८ आचार्यवर्य श्री पूज्यपाद मोतीराम जी महाराज, उनके शिष्य श्री श्री श्री १००८ गणावच्छेदक

तथा स्थविरपदविभूषित श्री गणपतिराय जी महाराज, उनके शिष्य श्री श्री श्री १०८ गणावच्छेदक श्री जयराम दास जी महाराज और उनके शिष्य श्री श्री श्री १०८ प्रवर्त्तक पद विभूषित श्री शालिगराम जी महाराज की ही कृपा से उन का शिष्य मैं इस महत्त्वपूर्ण कार्य को पूर्ण कर सका हूँ।

गुरुचरणरजःसेवी
जैनमुनि उपाध्याय आत्माराम

आवश्यक सूचना

स्वाध्याय के समान दूसरा कोई तप नहीं

स्वाध्याय सर्व दुःखों से विमुक्त करने वाला है

[सज्झाय सव्व दुक्ख विमोक्खणे]

प्रिय विज्ञ पुरुषो ! आपको यह जान कर अत्यन्त हर्ष होगा कि हमने, साहित्यरत्न जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज सगृहीत तत्त्वार्थसूत्र-जैनागमसमन्वय में से केवल मूल-सूत्रों और मूल आगम-पाठों को, उन से ही पुन. सम्पादित कराकर, स्वाध्याय-प्रेमी महानुभावों के लिये, एक सुन्दर गुटका के आकार में प्रकाशित कर दिया है। इस स्वाध्यायगुटका मे पूर्व प्रकाशित

बृहद् ग्रन्थ की अपेक्षा, उपाध्याय जी महाराज ने, हमारी प्रार्थना पर इतनी और विशेषता कर दी है कि पहले संस्करण में, जहाँ आगमों के कहीं उपयोगी मात्र आंशिक पाठ उद्धृत किये थे, अब वहाँ इस गुटके में उनका सम्पूर्ण पाठ दे दिया है तथा कई एक आवश्यक पाठ अधिक बढ़ा दिये है, ताकि स्वाध्याय-प्रेमियों को आगम-पाठों के अधिक परामर्श का पुण्य अवसर प्राप्त हो सके। इसलिये, सर्वज्ञ वीतराग प्रणीत धर्म में अभिरुचि रखने वाले प्रत्येक महानुभाव को, यह लघु पुस्तकरत्न, प्रतिदिन के स्वाध्याय के लिये, अवश्य अपने पास रखना चाहिये।

गुजरमल प्यारेलाल
चौड़ा बाजार, लुधियाना

त्रिविध धर्म
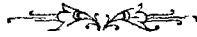
तिविहे भगवता धम्मे पण्णत्ता, तं जहा—सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते, जया सुअधिज्झितं भवति तदा सुज्झातियं भवति जया सुज्झातियं भवति तदा सुतवस्सियं भवति, से सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते सुतक्खाते णं भगवता धम्मे पण्णत्ते ।

टीका—'तिविहे' इत्यादि स्पष्टं, केवलं भगवता महावीरेणेत्येवं जगाद सुधर्म्मस्वामी जम्बूस्वामिनं प्रतीति, सुष्ठु—कालविनयाराधनेनाधीतं—गुरुसकाशात् सूत्रतः पठितं स्वधीतं, तथा सुष्ठु-वि-

धिना तत एव व्याख्यानेनार्थत. श्रुत्वा ध्यातम्—अनुप्रेक्षित, श्रुतमिति गम्यं सुध्यातम्, अनुप्रेक्षणाभावे तत्त्वानवगमेनाध्ययनश्रवणयो. प्रायोऽकृतार्थत्वादिति, अनेन भेदद्वयेन श्रुतधर्म्म उक्त, तथा सुष्ठु–इह शोकाद्याशंसारहितत्वेन तपस्यितं—तपस्यानुष्ठानं, सुतपस्यितमिति च चारित्रधर्म्म उक्त इति, त्रयाणामप्येषामुत्तरोत्तरतोऽविनाभावं दर्शयति—'जया' इत्यादि व्यक्तं, पर निर्दोषाध्ययनं विना श्रुतार्थाप्रतीते. सुध्यातं न भवति, तदभावे ज्ञानविकलतया सुतपस्यितं न भवतीति भावः, यदेतत्—स्वधीतादित्रयं भगवता वर्द्धमानस्वामिना धर्म्मः प्रज्ञप्त. 'से'त्ति स व्याख्यातः—सुष्ठूक्त. सम्यग्ज्ञानक्रियारूपत्वात्, तयोश्चैकान्तिकात्यन्तिकसुखावन्ध्योपायत्वेन निरुपचरितधर्म्मत्वात्. सुगतिधारणाद्धि धर्म्म इति, उक्तं च—

स्वाध्याय का महाफल
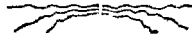
सुयस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सु०

अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥

उत्तराध्ययन सू० अध्य० २६

सज्झाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

स० नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १८ ॥

उत्तरा० अ० २६

सज्झाए वा निउत्तेणं सव्वदुक्खविमोक्खणे

उत्तरा० अ० २६ गा० १०

सज्झायं च तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं—

उत्तरा० गा० ३७

स्वाध्याय महातप है
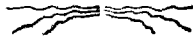
बारसविहम्मिवि तवे,
अब्भितरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।
नवि अत्थि नवि य होही,
सज्झायसमं तवोकम्मं ॥१२९॥

धन्यवाद

आत्मविकास करने के लिये स्वाध्याय भी एक मुख्य साधन है। प्रत्येक व्यक्ति को उचित है कि वह आत्मविकास के लिए और तत्त्वों को सम्यक्तया जानने के लिये सच्छास्त्रों का स्वाध्याय अवश्य करे। स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्मों के साथ साथ अज्ञानजन्य क्लेश का भी नाश हो जाता है। अतः यह पुस्तिका मूलपाठरूपस्वाध्यायप्रेमियों के लिये ही प्रकाशित की जा रही है।

इसके प्रकाशन का व्यय, लुधियाना निवासी, लाला विलायतीराम कुन्दनलाल, लाला तोतामल घुद्दामल, लाला सोहनलाल युगलकिशोर तथा दिल्ली निवासी लाला मिलापचन्द और गुलाबचन्द जी ने दिया है। अतः वे धन्यवाद के पात्र हैं।

इस प्रकार के ज्ञान-प्रचार से आत्मा शीघ्र ही मोक्षाधिकारी हो सकता है । क्योंकि, ज्ञानदान सर्व दानों में श्रेष्ठ है । अत. उक्त महानुभावों का धर्मप्रेमी व्यक्तियों को अनुकरण करना चाहिये, जिस से वे भी स्वकीय वा परकीय कल्याण कर सकें ।

भवदीय
खज़ानचीराम जैन, लाहौर

सम्मति पत्र

सुप्रसिद्ध श्रीमान् पं० हंसराज जी शास्त्री

प्रस्तुत ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय स्वनामधन्य उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी की प्रोज्ज्वल प्रतिभा तथा उनके दीर्घकालीन सतत जैनागमाभ्यास का सुचारु फल है। आप श्वेताम्बर जैनधर्म की स्थानकवासी सम्प्रदाय में एक अद्वितीय विद्वान् हैं। यद्यपि आजतक आपने जैनधर्म से सम्बन्ध रखने वाली कई एक मौलिक पुस्तकें लिखीं तथा कई एक जैन आगमों का सुबोध हिन्दी भाषा मे अनुवाद भी किया तथापि प्रस्तुत ग्रन्थ के सकलन द्वारा आपने साहित्य प्रेमी जैन तथा जैनेतर सभ्य ससार का जो अमूल्य सेवा की है उसके लिये आपको जितना भी धन्यवाद दिया जाय उतना ही कम है।

आपका यह सग्रह तत्त्वज्ञान के जिज्ञासुओं की अभिलाषा-

पूर्ति के लिये तो पर्याप्त है ही, परन्तु भारतीय तत्त्वज्ञान की ऐतिहासिक दृष्टि से गवेषणा करने वाले विद्वानों के लिये भी यह बड़े महत्त्व की वस्तु है ।

जैनतत्त्वज्ञान के संस्कृत वाङ्मय में तत्त्वार्थ सूत्र का स्थान सब से ऊंचा है । जैन तत्त्व ज्ञान विषयक संस्कृत भाषा का यह पहला ही ग्रन्थ है । जैनधर्म के प्रत्येक सम्प्रदाय का इस के लिये बहुमान है । यही कारण है कि श्वेताम्बर और दिगम्बर आम्नाय के सभी विद्वानो ने, अपनी २ योग्यता के अनुसार इस पर अनेक भाष्य वार्त्तिक और विशद टीकाएँ लिख कर अपने स्वत्व एवं श्रद्धा का परिचय दिया है ।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रणेता वाचकवर्य उमास्वाति भी अपनी कक्षा के एक ही विद्वान् हुए हैं । जैन विद्वानों में तत्त्वज्ञान सम्बन्धी संस्कृत रचना में सब से अग्रस्थान इन्हीं को ही प्राप्त हुआ है । इन्होंने अपनी उक्त रचना मे आगमों में रहे हुए समग्र जैनतत्त्वज्ञान को प्राजल संस्कृत भाषा में जिस खूबी से संगृहीत किया है वह उनके प्रौढ पाण्डित्य, जैनागम

विषयिणी उनकी गम्भीरगवेषणा और लोकोत्तर प्रतिभा चमत्कार के लिये ही आभारी हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में तत्त्वार्थसूत्रान्तर्गत सूत्रों की रचना जिन २ आगम-पाठों के आधार पर की गई है उन सभी आगम पाठों का उपयोगी अंश उन २ सूत्रों के नीचे उद्धृत कर दिया गया है। कहीं २ पर तो तत्त्वार्थ के मूल सूत्र और आगे के मूलपाठ में अक्षरशः समानता देखने में आती है। केवल भाषा के उच्चारण मात्र में ही अन्तर है तथा शब्दशः और भावशः साम्य तो प्रायः है ही। इससे वाचक उमास्वाति जी की उक्त रचना का मूल जैनागमों के साथ कितना गहरा सम्बन्ध है इस बात के निर्णय के लिये किसी प्रमाणान्तर के ढूढने की आवश्यकता नहीं रहती। मुनि जी के इस समन्वय रूप संकलन को देखकर मेरी तो यह दृढ़ धारणा हो गई है कि तत्त्वार्थसूत्रों की आधारशिला निस्सन्देह प्राचीन श्वेताम्बर परम्परा में उपलब्ध जैनागम ही हैं।

मेरे विचार में तत्त्वार्थ का यह आगमसमन्वय साम्प्रदायिक

व्यामोह के कारण अन्धकार में रहे हुए बहुत से विवादास्पद उपयोगी विषयों की गुत्थी को सुलझाने मे भी सफल सिद्ध होगा । एव तत्त्वार्थसूत्र पर विशिष्ट श्रद्धा रखने वाले विद्वानों को उसके (तत्त्वार्थसूत्र के) मूल स्रोतरूप जैनागमों की तरफ अभिरुचि बढने की भी इसमे पूर्ण आशा है। मेरी दृष्टि में तत्त्वार्थसूत्र ही एक ऐसा ग्रन्थ है जो जैनधर्म की सभी शाखाओं को बिना किसी हिचकिचाहट के मान्य हो सकता है। इसलिये इस अमूल्य पुस्तक का सुचारु रूप से सम्पादन करके उसका प्रचार करना चाहिये ।

अन्त मे मुनि जी के इस उपयोगी और सुचारु समन्वय का अभिनन्दन करता हुआ मै उनसे साग्रह प्रार्थना करता हू कि जिस प्रकार उन्हो ने इस कार्य में सब से प्रथम श्रेय प्राप्त किया है उसी प्रकार वे तत्त्वार्थ के सागोपाग सम्पादन मे भी सबसे अग्रसर होने का स्तुत्य प्रयास करे ।

तत्त्वार्थसूत्र-
जैनागमसमन्वयः ।

प्रथमोऽध्यायः ।
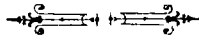
सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि* मोक्ष-मार्गः ॥१॥

नादंसणिस्स नाणं नाणेण विना न हुन्ति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं॥

उत्त० अ० २८ गा० ३०

---

* **सम्मदंसणे** दुविहे पगणत्ते। त जहा-णिसग्गसम्म-द्दसणेचेव अभिगमसम्मद्दसणे चेव। णिसग्गसम्मद्दसणे दुविहे पगणत्ते। त जहा-पडिवाई चेव अपडिवाई चेव। अभिगम सम्मद्दसणे दुविहे पगणत्ते। त जहा-पडिवाई चेव अपडिवाई चेव।

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सूत्र ७०

तिविहे सम्मे पराणत्ते । तं जहा-नाणसम्मे, दंसणसम्मे, चरित्तसम्मे ।

स्था० स्थान ३ उद्देश ४ सू० १६४

दुविहे णाणे पगणत्ते। त जहा-पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव १। पच्चक्खे णाणे दुविहे पगणत्ते। त जहा-केवलणाणे चेव णोकेवलणाणे चेव २। केवलणाणे दुविहे पराणत्ते। त जहा-भवत्थकेवलणाणे चेव सिद्धकेवलणाणे चेव ३। भवत्थकेवलणाणे दुविहे पराणत्ते। त जहा-सजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ४। सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पराणत्ते। त जहा-पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ५। अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ६। एव अजोगिभवत्थकेवलणाणेऽवि ७-८। सिद्धकेवलणाणे दुविहे पराणत्ते। त जहा-अणतरसिद्धकेवलणाणे चेव परपरसिद्धकेवलणाणे चेव ६। अणतरसिद्ध-

मोक्खमग्गगइं तच्च, सुणेह जिणभासिय ।
चउकारणसजुत्त, नाणदसणलक्खणं ॥

केवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। त जहा—एक्काणतरसिद्धकेवलणाणे अणेक्काणतरसिद्धकेवलणाणे चेव १० । परपरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। त जहा—एक्कपरपरसिद्धकेवलणाणे चेव अणेक्कपरपरसिद्धकेवलणाणे चेव ११ । णोकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। त जहा- ओहिणाणे चेव मणपज्जवणाणे चेव १२ । ओहिणाणे दुविहे पण्णत्ते । त जहा—भवपच्चइए चेव खओवसमिए चेव १३ । दोण्ह भवपच्चइए पण्णत्ते। त जहा—देवाण चेव नेरइयाण चेव १४ । दोण्ह खओवसमिए पण्णत्ते । त जहा—मणुस्साण चेव पचिंदियतिरिक्खजोणियाण चेव १५ । मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते। त जहा—उज्जुमति चेव विउलमति चेव १६। परोक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते। त जहा—आभिणिबोहियणाणे चेव सुयनाणे चेव १७ । आभिणिबोहियणाणे दुविहे पण्णत्ते। त जहा—सुयनिस्सिए चेव असुय-

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एस मग्गु त्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥

निस्सिए चेव १८ । सुयनिस्सिए दुविहे पण्णत्ते । त जहा–अत्थोग्गहे चेव वंजणोग्गहे चेव १६ । असुयनिस्सितेऽवि एमेव २० । सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते । त जहा–अगपविट्ठे चेव अगबाहिरे चेव २१ । अगबाहिरे दुविहे पण्णत्ते । त जहा–आवस्सए चेव आवस्सयवइरित्ते चेव २२ । आवस्सयवतिरित्ते दुविहे पण्णत्ते । त जहा–कालिए चेव उक्कालिए चेव २३ ॥
स्था० स्थान २ उद्दे० १ सूत्र ७१

दुविहे धम्मे पण्णत्ते । त जहा–सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव । सुयधम्मे दुविहे पण्णत्ते । त जहा–सुत्तसुयधम्मे चेव अत्थसुयधम्मे चेव । **चरित्तधम्मे** दुविहे पण्णत्ते । त जहा–आगारचरित्तधम्मे चेव अणगारचरित्तधम्मे चेव ।

दुविहे सजमे पण्णत्ते* । त जहा–सरागसजमे चेव वीत-

* 'अणगारचरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते' इत्यपि पाठान्तरम् ।

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥

उत्त० अ० २८ गा० १–३

रागसजमे चेव । सरागसजमे दुविहे पएणत्ते । त जहा- सुहुम-सपरायसरागसजमे चेव बादरसपरायसरागसजमे चेव । सुहुम-सपरायसरागसजमे दुविहे पएणत्ते । त जहा–पढमसमयसुहुम सपरायसरागसजमे चेव अपढमसमयसु० । अथवा चरम-समयसु० अचरिमसमयसु० । अहवा सुहुमसपरायसरागसजमे दुविहे पएणत्ते । त जहा–संकिलेसमाणए चेव विसुज्झमाणए चेव । बादरसपरायसरागसजमे दुविहे पएणत्ते । त जहा–पढ-मसमयबादर० अपढमसमयबादरस० । अहवा चरिमसमय० अचरिसमय० । अहवा बायरसपरायसरागसजमे दुविहे पएणत्ते । त जहा–पडिवाति चेव अपडिवाति चेव । वीयरागसजमे दुविहे पएणत्ते । त जहा–उवसतकसायवीयरागसजमे चेव खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव । उवसतकसायवीयरागसजमे दुविहे पएणत्ते ।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं ।
भावेण सद्दहन्तस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ॥

उ० अ० २८ गा० १५

त जहा-पढमसमयउवसतकसायवीयरागसजमे चेव अपढमसमय-उव० । अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । खीणकसायवीय-रागसजमे दुविहे पएणत्ते । त जहा—छउमत्थखीणकसायवीय-रागसजमेचेव केवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव । छउ-मत्थखीणकसायवीयरागसजमे दुविहे पएणत्ते । त जहा—सय बुद्धछउमत्थखीणकसाय० बुद्धबोहियछउमत्थ० । सयंबुद्धछ उमत्थ० दुविहे पएणत्ते । त जहा—पढमसमय० अपढमसमय० । अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । केवलिखीणकसाय-वीतरागसजमे दुविहे पएणत्ते । तं जहा—सजोगिकेवलिखीण-कसाय० अजोगिकेवलिखीणकसायवीयराग० । सजोगिकेव-लिखीणकसायसजमे दुविहे पएणत्ते । त जहा—पढमसमय०

तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥

सम्मद्दंसणे दुविहे पराणत्ते । तं जहा-णिसग्ग-सम्मद्दंसणे चेव अभिगमसम्मद्दंसणे चेव ॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७०

अपढमसमय० । अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । अजोगिकेवलिखीणकसाय० संजमे दुविहे पराणत्ते । तं जहा-पढमसमय० अपढमसमय० । अहवा चरिमसमय० अचरिम-समय० ॥

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सूत्र ७२

कतिविहा णं भंते ! आराहणा पराणत्ता ? गोयमा ! तिविहा आराहणा पराणत्ता । तं जहा-नाणाराहणा दंसणाराहणा चरित्ताराहणा । णाणाराहणा णं भंते ? कतिविहा पराणत्ता ? गोयमा ! तिविहा पराणत्ता । तं जहा-उक्कोसिआ मज्झिमा जहन्ना । दंसणाराहणा णं भंते ? एवं चेव तिविहावि, एवं चरित्ताराहणावि ॥ जस्सणं भंते ? उक्कोसिया णा-

जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ॥४॥

णाराहणा तस्स उक्कोसिया दसणाराहणा, जस्स उक्कोसिआ दसणाराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स दसणाराहणा उक्कोसिया वा अजहन्न उक्कोसिया वा। जस्स पुण उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा जहन्ना वा जहन्नमणुक्कोसा वा। जस्सण भंते ? उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया णाणाराहणा, जहा उक्कोसिया णाणाराहणाय दसणाराहणाय भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणाय य चरित्ताराहणाय भणियव्वा। जस्स ण भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया दंसणाराहणा ? गोयमा ? जस्स उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा

नव सब्भावपयत्था पराणत्ते। तं जहा-जीवा अजीवा पुराणं पावो आसवो संवरो निज्जरा बंधो मोक्खो॥ स्था० स्थान ६ सू० ६६५

उक्कोसा वा जहन्ना वा अजहन्नमणुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियमा उक्कोसा। उक्कोसिय ण भंते? णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अंत करेंति? गोयमा! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव अंत करेति। अत्थेगतिए दोच्चेण भवग्गहणे ण सिज्झति जाव अंत करेति। अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति। उक्कोसिय ण भंते! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं एवं चेव उक्कोसियरणं भंते! चरित्ताराहणं आराहेत्ता एवं चेव, नवरं अत्थेगतिए कप्पातीय एसु उववज्जति मज्झिमिय ण भंते! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अंत करेंति? गोयमा! अत्थेगतिए

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५॥

जत्थ य जं जाणेज्जा निक्खेवं निक्खिवे निरवसेसं।
जत्थवि अ न जाणेज्जा चउक्कगं निक्खिवे तत्थ॥

आवस्सयं चउव्विहं पराणत्ते। तं जहा—नामावस्सयं ठवणावस्सयं दव्वावस्सयं भावावस्सयं॥

अनु० सू० ८

प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥

दोच्चे ण भवग्गहणेण सिज्झइ जाव अंत करेंति तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमइ, मज्झिमिय भंते! दसणाराहण आराहेत्ता एत्र चेव, एव मज्झिमिय चरित्ताराहण पि। जहन्नियन्न भंते! नाणाराहण आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अंत करेंति? गोयमा! अत्थेगतिए तच्चेण भवग्गहणेण सिज्झइ जाव अंत करेइ सत्तट्ठ भवग्गहणाइ पुण ना इक्कमइ। एवं दसणाराहण पि एव चरित्ताराहण पि॥सूत्र ३५५॥

दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहिं नयविहीहिं, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥

उत्तरा० अ० २८ गाथा २४

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थि-तिविधानतः ॥७॥

१ समग्रपाठस्त्वयम्—

से किं त उवग्घाय निज्जुति अणुगमे ? इमाहिं दोहिं गाहाहिं अणुगतव्वो । त जहा—उद्देसे १ निद्देसे अ २ निग्गमे ३ खेत्त ४ काल ५ पुरिसेय ६ कारण ७ पच्चय ८ लक्खण ९ नए १० समोआरणाणुमए ११ ॥१३३॥ कि १२ कइविहं १३ कस्स १४ कहि १५ केसु १६ कह १७ किच्चिर हवइ काल १८ कइ १९ सतर २० मविरहिय २१ भवा २२ गरिस २३ फासण २४ निरुत्ति २५ ॥१३४॥ सेत उवग्घाय निज्जुत्ति अणुगमे । सू० १५१

निद्देसे पुरिसे कारण कहि केसु कालं कइविहं ॥

अनु० सू० १५१

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥८॥

से किं तं अणुगमे ? नवविहे पण्णत्ते । तं जहा—संतपयपरूवणया १ दव्वपमाणं च २ खित्त ३ फुसणा य ४ कालो य ५ अंतरं ६ भाग ७ भाव ८ अप्पाबहुं चेव । अनु० सू० ८०

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥९॥

पंचविहे णाणे पण्णत्ते । तं जहा—आभिणिबोहियणाणे सुयणाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे ॥

स्था० स्थान ५ उद्दे० ३ सू० ४६३, अनु० सू० १, नन्दि १

भगवती शतक ८ उद्दे० २ सू० ३१८

तत्प्रमाणे ॥१०॥

आद्ये परोक्षम् ॥११॥

प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥

से किं तं जीवगुणप्पमाणे ? तिविहे पराणत्ते। तं जहा–णाणगुणप्पमाणे दंसणगुणप्पमाणे–चरित्त-गुणप्पमाणे। अनु० सू० १४४

दुविहे नाणे पराणत्ते। त जहा–पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव १। पच्चक्खे नाणे दुविहे पराणत्ते। त जहा–केवलणाणे चेव णोकेवलणाणे चेव २।

णोकेवलणाणे दुविहे पराणत्ते। तं जहा–ओहि-णाणे चेव मणपज्जवणाणे चेव। परोक्खे णाणे दुविहे पराणत्ते। तं जहा–आभिणिबोहियणाणे चेव, सुयणाणे चेव।

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सू० ७१

मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनि-बोध इत्यनर्थान्तरम् ॥१३॥

ईहा अपोह वीमंसा मग्गणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना सव्वं आभिणिबोहिअं ॥

नन्दि० प्र० मतिज्ञानगाथा ८०

तदिन्द्रियाऽनिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥

से किं तं पच्चक्खं ? पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं ।
तं जहा-इन्दियपच्चक्खं नोइन्दियपच्चक्खं च ।

नन्दि० ३ अनु० १४४

अवग्रहेहावायधारणाः ॥१५॥

से किं तं सुअनिस्सिअं ? चउव्विहं पण्णत्तं ।
तं जहा-१ उग्गहे २ ईहा ३ अवाओ ४ धारणा ।

नन्दि० २७

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवा-णां सेतराणाम् ॥१६॥

छव्विहा उग्गहमती पराणत्ता। तं जहा-खिप्प-मोगिण्हइ बहुमोगिण्हइ बहुविधमोगिण्हइ धुव-मोगिण्हइ अणिस्सियमोगिण्हइ असंदिद्धमोगि-राहइ। छव्विहा ईहामती पराणत्ता। तं जहा-खिप्प-मीहति बहुमीहति जाव असंदिद्धमीहति। छव्विधा अवायमती पराणत्ता। त जहा-खिप्पमवेति जाव असंदिद्ध अवेति। छव्विहा धारणा पराणत्ता। तं जहा-बहुं धारेति पोराणं धारेति दुद्धरं धारेति अ-णिस्सियं धारेति असंदिद्धं धारेति।

स्था० स्थान ६, सूत्र ५१०

जं बहु बहुविह खिप्पा अणिस्सिय निच्छिय धुवेयर विभिन्ना, पुणरोग्गहादओ तो तं छत्तीस-त्तिसयमेदं। इयि भासयारेण

अर्थस्य ॥१७॥

से किं तं अत्थुग्गहे ? अत्थुग्गहे छव्विहे पराणत्ते । तं जहा–सोइन्दियअत्थुग्गहे, चक्खिंदियअत्थुग्गहे, घाणिंदियअत्थुग्गहे, जिब्भिंदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइन्दियअत्थुग्गहे ॥ नन्दिसूत्र ३०

व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥१८॥

न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥१९॥

सुयनिस्सिए दुविहे पराणत्ते । तं जहा–अत्थोग्गहे चेव वंजणोवग्गहे चेव ॥

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सू० ७१

से किं तं वंजणुग्गहे ? वंजणुग्गहे चउव्विहे पराणत्ते । तं जहा–सोइन्दियवंजणुग्गहे, घाणिंदियवंजणुग्गहे, जिब्भिंदियवंजणुग्गहे, फासिंदियवंजणुग्गहे से तं वंजणुग्गहे ॥ नन्दि सू० २६,

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥

मईपुव्वं जेण सुअं न मई सुअपुव्विआ ॥

नन्दि० सूत्र २४

सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा—अंगपविट्ठे चेव अंगबाहिरे चेव ॥

स्था० स्थान २, उद्दे० १, सू० ७१

से किं तं अंगपविट्ठं ? दुवालसविहं पण्णत्तं । तं जहा—१ आयारो २ सुयगडे ३ ठाणं ४ समवाओ ५ विवाहपण्णत्ती ६ नायाधम्मकहाओ ७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइअदसाओ १० पण्हावागरणाइं ११ विवागसुअं १२ दिट्ठिवाओ ॥

नन्दि० सूत्र ४४

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥२१॥

दोण्हं भवपच्चइए पण्णत्ते । तं जहा—देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ॥

स्था० स्थान २, उ० १, सू० ७१

से किं तं भवपच्चइअ ? दुण्हं । तं जहा–देवाण य नेरइयाण य ॥ नन्दि० सू० ७

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥२२॥

से किं तं खाओवसमिअं ? खाओवसमिअं दुण्हं । तं जहा–मणूसाण य पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण य । को हेऊ खाओवसमिअ ? खाओवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेण ओहिनाणं समुप्पज्जइ ॥ नन्दि० सू० ८

प्रज्ञापनासूत्रे–अवधिज्ञानस्याष्टौ भेदा प्रदर्शिता । यथा—

आणुगामिते अणाणुगामिते,

वड्ढमाणते हायमाणए पडिवाई

अपडिवाई अवट्ठिए अणवट्ठिए ।

पद ३३ सू० ३१६

दोण्हं खओवसमिए पण्णत्ते । तं जहा-मणुस्साणं चेव पांचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७१,

छव्विहे ओहिनाणे पण्णत्ते । त जहा-अणुगामिए, अणाणुगामिते, वड्ढमाणते, हीयमाणते, पडिवाई, अपडिवाई ॥

स्था० स्थान ६ सू० ५२६

ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः ॥२३॥

मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-उज्जुमति चेव विउलमति चेव ॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७१

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥२४॥

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्त । तं जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ तत्थ दव्वओणं उज्जुमईणं अणंते अणंतपएसिए खंधे जाणइ पासइ ते

चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसु-द्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ खेत्तओणं उज्जुमई अ जहन्नेण अंगुलस्स असंखे ज्जइभागं उक्कोसेण अहे जाव ईमीसेरयणप्पभाए पुढवीए उवरिम हेट्ठिल्ले खुड्डग पयरेउड्ढंजाव जोइसस्स उवरिमतले तिरियं जाव अतो मणुस्सखित्ते अड्ढा-इज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरस्सकम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पगणाए अंतरद्दीवणेसु सरणीणं पचिंदियाण पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ पासइ तं चेव विउलमइ अड्ढाइज्जेहि अगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतर विसुद्धतरं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ पा-सइ कालओणं उज्जुमइ जहण्णेण पलिओवमस्स—

असखिज्जइ भागं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखिज्जइ भागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ पासइ तं चेव विउलमइ अब्भहियतरागं विसुद्ध-तरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ भावओण

उज्जुमइ अणंते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ तं चेव विउलमइणा अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं जाणइ पासइ मणपज्जवणाणं पुण जण मण परिचिंतिअत्थ पागडणं माणुसखित्त निबद्ध गुणा पच्चइय चरित्तवओ सेतं मणपज्जवणाणं ॥

नन्दि० सू० १८

विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्यो ऽवधिमनःपर्ययोः ॥२५॥

भेद विसय संठाणे अब्भिंतर वाहिरेय देसोही।
उहिस्सय खयबुड्ढी पडिवाई चेव अपडिवाई ॥

प्रज्ञापना सू० पद ३३ गा० १

इड्ढीपत्त अपमत्त सजय सम्मदिट्ठि पज्जतग सखेज्जवासाउअ कम्मभूमिअ गब्भवक्कतिअ मणुस्साण मणपज्जवनाणं समुप्पज्जइ ॥

मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥

तत्थ दव्वओणं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ, खेत्तओणं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ न पासइ, कालओणं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वकालं जाणइ न पासइ, भावओणं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ न पासइ ॥

नन्दि० सू० ३७

से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते। तं जहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओणं सुअणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओणं सुअणाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ, कालओणं सुअणाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ

पासइ, भावओण सुअणाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥

नन्दि० सू० ५८.

रूपिष्ववधेः ॥२७॥

ओहिदंसणं ओहिदंसणिस्स सव्वरूविदव्वेसु न पुण सव्वपज्जवेसु ॥

अनु० सू० १४४

तं समासओ चउव्विहं पगण्णत्तं । त जहा–दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तत्थ दव्वओ ओहिनाणी जहन्नेणं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्वाइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ खेत्त-ओणं ओहिनाणी जहण्णेण अगुलस्स असंखिज्जइ भागं जाणइ पासइ उक्कोसेणं असखिज्जाइं अलोग-लोगपमाणमित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ काल-ओणं ओहिनाणी जहण्णेणं आवलिआए असंखि-

ज्जाइ भागं जाणइ पासइ उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उसप्पिणीओ ओसप्पिणीओ अईयं अणागयं च काल जाणइ पासइ भावओणं ओहिनाणी जहन्नेणं अणंते भावे जाणइ पासइ उक्कोसेण वि अणंनभावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ ॥

तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ॥२८॥

सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणपज्जवा। ओहिणाण-पज्जवा अनन्तगुणा, सुयणाणपज्जवा अनन्तगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा अनतगुणा, केवलनाण-पज्जवा अनतगुणा ॥

भग० श० ८ उ० २ सू० ३२३

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥२९॥

केवलदसणं केवलदसणिस्स सव्वदव्वेसु अ, सव्वपज्जवेसु अ ॥

अनु० दर्शनगुणप्रमाण० सू० १४४

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं। तं जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वओ ण केवलनाणी सव्व दव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओ ण केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ, कालओ णं केवलनाणी सव्वं काल जाणइ पासइ, भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ । अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं । सासयमप्पडिवाई एगविह केवल नाण ॥

न० सू० २२

एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥

आभिणिबोहियनाणसाकारो व उत्ताणं भते ! चत्तारि णाणाइं भयणाए ॥

व्या० प्र० श० ८ उ० २ सू० ३२०

जे णाणी ते अत्थेगतिया दुणाणी अत्थेगतिया तिणाणी अत्थेगतिया चउणाणी अत्थेगतिया एगणाणी । जे दुणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी य, जे तिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुतणाणी ओहिणाणी य, अहवा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी मणपज्जवणाणी य, जे चउणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुतणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी य, जे एगणाणी ते नियमा केवलणाणी ॥　　　जीवाभि० प्रतिपत्ति० १ सू० ४१

मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥३१॥

सदसतोरविशेषाद् यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥३२॥

---

१ व्याख्याप्रज्ञप्तौ (८—२) राजप्रश्नीयसूत्रे चापि एतादृश एव पाठ ।

अन्नाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते । तं जहा-मइअन्नाणे सुयअन्नाणे विभंगन्नाणे ॥

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ८ उ० २ सू० ३१८

अण्णाणपरिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते । तं जहा-मइअण्णाणपरिणामे, सुयअण्णाणपरिणामे, विभंगणाणपरिणामे ॥

प्रज्ञापना पद १३ ज्ञानपरिणामविषय

स्था० स्थान ३ उ० ३ सू० १८७

से किं तं मिच्छासुय ? जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धिमइ विगप्पिअं इत्यादि ॥

नान्द० सू० ४२

अविसेसिआ मई मइनाणं च मइअन्नाणं च इत्यादि ॥

नान्द० सू० २५

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवम्भूताः नयाः ॥३३॥

सत्त मूलणया पण्णत्ता । तं जहा-णेगमे, संगहे, ववहारे, उज्जुसुए, सद्दे, समभिरूढे, एवंभूए ॥

अनु० १३६

स्था० स्थान ७ सू० ५५२

इति श्री जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-संगृहीत तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये

प्रथमोऽध्याय समाप्त ।

द्वितीयोऽध्यायः ।
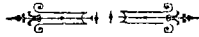
औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥१॥

छव्विहे भावे पण्णत्ते । तं जहा–ओदइए उवसमिते खत्तिते खओवसमिते पारिणामिते सन्निवाइए ॥ स्था० स्थान ६ सू० ५३७

द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥२॥

सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥

ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥४॥

ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमाऽसंयमाश्च ॥५॥

गतिकषायलिङ्गमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥६॥

जीवभव्याभव्यत्वानि च ॥७॥

से किं तं उदइए ? दुविहे पण्णत्ते । तं जहा— उदइए अ उदयनिप्फण्णे अ । से किं तं उदइए ?

अट्ठण्हं कम्मपयडीणं उदएणं, से तं उदइए। से किं तं उदयनिप्फन्ने ? दुविहे पएणत्ते। तं जहा— जीवोदयनिप्फन्ने अ अजीवोदयनिप्फन्ने अ। से किं तं जीवोदयनिप्फन्ने ? अणेगविहे पएणत्ते। तं जहा— णेरइए तिरिक्खजोणिए मणुस्से देवे पुढविकाइए जाव तसकाइए कोहकसाई जाव लोहकसाई इत्थीवेदए पुरिसवेदए णपुंसगवेदए कण्हलेसे जाव सुक्कलेसे मिच्छादिट्ठी अविरए असएणी अएणाणी आहारए छउमत्थे सजोगी ससारत्थे असिद्धे, से त जीवोदयनिप्फन्ने। से किं नं अजीवोदयनिप्फन्ने ? अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा—उरालिअं वा सरीरं उरालिअसरीरपओगपरिणामिअं वा दव्वं, वेउव्विअं वा सरीरं वेउव्वियसरीरपओगपरिणामिअं वा दव्वं, एवं आहारगं सरीरं तेअग सरीरं कम्मगसरीरं च भाणिअव्व, पओगपरिणामिए वण्णे गंधे

रसे फासे, से तं अजीवोदयनिप्फरणे । से तं उदय-
निप्फरणे, से तं उदइए ।

से किं तं उवसमिए? दुविहे पराणत्ते, तं जहा—
उवसमे अ उवसमनिप्फण्णे अ । से किं तं उवसमे?
मोहणिज्जस्स कम्मस्स उवसमेणं, से तं उवसमे ।
से किं तं उवसमनिप्फण्णे? अणेगविहे पराणत्ते,
तं जहा—उवसंतकोहे जाव उवसंतलोभे उवसं-
तपेज्जे उवसंतदोसे उवसंतदंसणमोहणिज्जे उवसं-
तमोहणिज्जे उवसमिआ सम्मत्तलद्धी उवसमिआ
चरित्तलद्धी उवसंतकसायछउमत्थवीयरागे, से तं
उवसमनिप्फण्णे । से तं उवसमिए ।

से किं तं खइए? दुविहे पराणत्ते । तं जहा—
खइए अ खयनिप्फण्णे अ । से किं तं खइए?
अट्ठण्हं कम्मपयडीणं खए णं, से तं खइए । से किं
तं खयनिप्फण्णे? अणेगविहे पराणत्ते, तं जहा—
उप्परणणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली खीण-

आभिणिबोहियणाणावरणे खीणसुअणाणावरणे खीणओहिणाणावरणे खीणमणपज्जवणाणावरणे खीणकेवलणाणावरणे अणावरणे निरावरणे खीणा-वरणे णाणावरणिज्जकम्मविप्पमुक्के, केवलदंसी सव्वदंसी खीणनिद्दे खीणनिद्दानिद्दे खीणपयले खीणपयलापयले खीणथीणगिद्धी खीणचक्खुदंस-णावरणे खीणअचक्खुदंसणावरणे खीणओहिदंस-णावरणे खीणकेवलदंसणावरणे अणावरणे निरा-वरणे खीणावरणे दरिसणावरणिज्जकम्मविप्पमुक्के; खीणसायावेअणिज्जे खीणअसायावेअणिज्जे अवेअणे निव्वेअणे खीणवेअणे सुभासुभवेअणिज्जकम्मविप्प-मुक्के, खीणकोहे जाव खीणलोहे खीणपेज्जे खीण-दोसे खीणदंसणमोहणिज्जे खीणचरित्तमोहणिज्जे अमोहे निम्मोहे खीणमोहे मोहणिज्जकम्मविप्पमुक्के, खीणणेरइआउए खीणतिरिक्खजोणिआउए खीण-मणुस्साउए खीणदेवाउए अणाउए निराउए खीणा-

उए आउकम्मविप्पमुक्के, गइजाइसरीरंगोवंगबंधण-
संघयण संठाणअणेगबोंदिविंदसंघायविप्पमुक्के खीण-
सुभनामे खीणअसुभणामे अणामे निरणामे खीण-
नामे सुभासुभणामकम्मविप्पमुक्के, खीणउच्चागोए
खीणणीआगोए अगोए निग्गोए खीणगोए उच्च-
णीयगोत्तकम्मविप्पमुक्के, खीणदाणंतराए खीण-
लाभंतराए खीणभोगंतराए खीणउवभोगंतराए
खीणविरियंतराए अणंतराए णिरंतराए खीणंतराए
अतरायकम्मविप्पमुक्के; सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुए
अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे, से तं खयनिप्फण्णे, से
तं खइए।

से किं तं खओवसमिए? दुविहे पण्णत्ते, तं
जहा–खओवसमिए य खओवसमनिप्फण्णे य। से
किं तं खओवसमे? चउण्हं घाइकम्माणं खओव-
समेणं, तं जहा–णाणावरणिज्जस्स दंसणावरणि-
ज्जस्स मोहणिज्जस्स अंतरायस्स खओवसमेणं, से

तं खओवसमे । से किं तं खओवसमनिप्फराणे ? अणेगविहे पराणत्ते, तं जहा-खओवसमिआ आभिणिबोहिअ-णाणलद्धी जाव खओवसमिआ मणपज्जवणाणलद्धी खओवसमिआ मइअराणाणलद्धी खओवसमिया सुअ-अराणाणलद्धी खओवसमिआ विभंगणाणलद्धी खओवसमिआ चक्खुदंसणलद्धी अचक्खुदंसणलद्धी ओहिदंसणलद्धी एवं सम्मदंसणलद्धी मिच्छादंसणलद्धी सम्ममिच्छादंसणलद्धी खओवसमिआ सामाइअचरित्तलद्धी एवं छेदोवट्ठावणलद्धी परिहारविसुद्धिअलद्धी सुहुमसंपरायचरित्तलद्धी एवं चरित्ताचरित्तलद्धी खओवसमिआ दाणलद्धी एवं लाभ० भोग० उवभोगलद्धी खओवसमिआ वीरिअलद्धी एवं पंडिअवीरिअलद्धी बालवीरिअलद्धी बालपडिअवीरिअलद्धी खओवसमिआ सोइन्दियलद्धी जाव खओवसमिआ फासिंदियलद्धी खओवसमिए आयारंगधरे एवं सु-

अगडंगधरे ठाणंगधरे समवायंगधरे विवाहपण्णत्ति-
धरे नायाधम्मकहा० उवासगदसा० अंतगडदसा०
अनुत्तरोववाइअ दसा० पण्हावागरणधरे विवागसु-
अधरे खओवसमिए दिट्ठिवायधरे खओवसमिए
णवपुव्वी खओवसमिए जाव चउद्दसपुव्वी खओव-
समिए गणी खओवसमिए वायए, से तं खओवस-
मनिप्फण्णे । से तं खओवसमिए ।

से किं तं पारिणामिए ? दुविहे पण्णत्ते, तं
जहा–साइपारिणामिए अ अणाइपारिणामिए अ ।
से किं तं साइपारिणामिए ? अणेगविहे पण्णत्ते, तं
जहा–

जुण्णसुरा जुण्णगुलो जुण्णघयं जुण्णतंदुला चेव ।
अब्भा य अब्भरुक्खा संझा गंधव्वणगरा य ॥२४॥

उक्कावाया दिसादाहा गज्जियं विज्जूणिग्घाया
जूवया जक्खादित्ता धूमिआ महिआ रयुग्घाया चंदोव-
रागा सूरोवरागा चंदपरिवेसा सूरपरिवेसा पडिचंदा

पडिसूरा इन्दधणू उदगमच्छा कविहसिया अमोहा वासा वासधरा गामा णगरा घरा पव्वता पायाला भवणा निरया रयणप्पहा सक्करप्पहा वालुअप्पहा पंकप्पहा धूमप्पहा तमप्पहा तमतमप्पहा सोहम्मे जाव अच्चुए गेवेज्जे अणुत्तरे ईसिप्पभाए परमाणुपोग्गले दुपएसिए जाव अणंतपएसिए, से तं साइपरिणामिए। से किं तं अणाइपरिणामिए ? धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पुग्गलत्थिकाए अद्धासमए लोए अलोए भवसिद्धिआ अभवसिद्धिआ, से तं अणाइपरिणामिए। से तं परिणामिए।

अनु० षड्भावाधिकार०

उपयोगो लक्षणम् ॥८॥

उवओगलक्खणे जीवे।

भ० सू० श० २ उ० १०

जीवो उवओगलक्खणो।

उत्त० सू० अ० २८ गा० १०

सद्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥

कतिविहे णं भंते! उवओगे पराणत्ते? गोयमा! दुविहे उवओगे पराणत्ते, तं जहा–सागारोवओगे, अणागारोवओगे य ॥१॥ सागारोवओगे णं भंते! कतिविहे पराणत्ते? गोयमा! अट्ठविहे पराणत्ते।

प्रज्ञा० सू० पद २६

अणागारोवओगे णं भंते! कतिविहे पराणत्ते? गोयमा! चउव्विहे पराणत्ते।

प्रज्ञा० सू० पद २६

संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥

दुविहा सव्वजीवा पराणत्ता, तं जहा–सिद्धा चेव असिद्धा चेव।

स्था० स्थान २ उ० १ सू० १०१

संसारसमावन्नगा चेव असंसारसमावन्नगा चेव ॥ स्था० स्थान २ उ० १ सू० ५७

समनस्काऽमनस्काः ॥११॥

दुविहा नेरइया पगणत्ता, तं जहा-सन्नी चेव असन्नी चेव, एवं पंचेंदिया सव्वे विगलिंदियवज्जा जाव वाणमंतरा वेमाणिया।

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७६

संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥१२॥

संसारसमावन्नगा तसे चेव थावरा चेव।

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ५७

पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥

पंच थावरा काया पगणत्ता, तं जहा-इंदे

थावरकाए (पुढवीथावरकाए) बंभेथावरकाए (आऊथावरकाए) सिप्पे थावरकाए (तेऊ थावर-काए) संमती थावरकाए (वाऊथावरकाए) पजा-वच्चेथावरकाए (वणस्सइथावरकाए)।

स्था० स्थान ५ उ० १ सू० ३६४

द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥१४॥

से किं तं ओराला तसा पाणा? चउव्विहा पएणत्ता, त जहा—बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया।

जीवा० प्रतिपत्ति० १ सू० २७

पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥

कति णं भंते! इंदिया पएणत्ता? गोयमा! पचेंदिया पएणत्ता।

प्रज्ञा० सू० १५ इन्द्रियपद० उ० १ सू० १९१

द्विविधानि ॥१६॥

कइविहा णं भंते ! इंदिया पराणत्ता ? गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तं जहा-दव्विंदिया य भाविंदिया य ।

प्रज्ञा० पद १५ उ० १

निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥

कएविहे णं भंते ! इंदियउवचए पराणत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदियउवचए पराणत्ते ।

कइविहे णं भंते ! इन्दियणिवत्तणा पराणत्ता ? गोयमा ! पचविहा इन्दियणिवत्तणा पराणत्ता ।

प्रज्ञा० उ० २ पद १५

लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥

कतिविहा णं भंते ! इन्दियलद्धी पराणत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इन्दियलद्धी पराणत्ता ।

प्रज्ञा० उ० २ इन्द्रियपद० १५

कतिविहा णं भंते ! इन्दिय उवउगद्धा पएण-त्ता ? गोयमा! पंचविहा इन्दियउवउगद्धा पएणत्ता।

प्रज्ञा० उ० २ इन्द्रियपद० १५

स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ॥१९॥

स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्थाः ॥२०॥

सोइन्दिए चक्खिदिए घाणिदिए जिब्भिदिए फासिंदिए।

प्रज्ञा० इन्द्रियपद १५

पंच इन्दियत्था पएणत्ता, तं जहा—सोइन्दियत्थे जाव फासिंदियत्थे।

स्था० स्थान ५ उ० ३ सू० ४४३

श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२१॥

सुणेइत्ति सुअं।

नन्दिसू० २४

वनस्पत्यन्तानामेकम् ॥२२॥

से किं तं एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपएण-

वणा ? एगिंदियसंसारसमावरणजीवपरणवरणा पंचविहा परणत्ता, तं जहा–पुढवीकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया ।

प्रज्ञा० प्रथम पद

कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥२३॥

किमिया–पिपीलिया–भमरा–मणुस्स इत्यादि ।

प्रज्ञा० प्रथम पद

संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥

जस्स णं अत्थि ईहा अवोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं सरणीति लब्भइ । जस्स णं नत्थि ईहा अवोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं असन्नीति लब्भइ ।

नन्दिसू० ४०

विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२५॥

कम्मासरीरकायप्पओगे। प्रज्ञा० पद १६

अनुश्रेणिः गतिः ॥२६॥

परमाणुपोग्गलाणं भंते! किं अणुसेढीं गती पवत्तति विसेढिं गती पवत्तति? गोयमा! अणुसेढीं गती पवत्तति नो विसेढिं गती पवत्तति? दुपएसियाण भंते! खंधाण अणुसेढीं गती पवत्तति विसेढीं गती पवत्तति एवं चेव, एवं जाव अणंतपएसियाणं खंधाणं। नेरइयाणं भंते! किं अणुसेढीं गती पवत्तति एवं विसेढीं गती पवत्तति एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं।

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक २५ उ० ३ सू० ७३०

अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥

उज्जूसेढीपडिवन्ने अफुसमाणगई उड्ढं एक-

समएणं अविग्गहेण गंता सागारोवउत्ते सिज्झिहिइ।

औपपातिक सू० सिद्धाधिकार सू० ४३

विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥२८॥

णेरइयाण उक्कोसेण तिसमतीतेणं विग्गहेण उववज्जंति एगिंदिवज्ज जाव वेमाणियाणं।

स्था० स्थान ३ उ० ४ सू० २२५

कइसमइएण विग्गहेणं उववज्जंति? गोयमा! एगसमइएण वा दिसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जन्ति।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ३४ उ० १ सू० ८५१

एकसमयाऽविग्रहा ॥२९॥

एगसमइयो विग्गहो नत्थि।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ३४ सू० ८५१

एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः ॥३०॥

जीवे णं भंते ! कं समयमणाहारए भवइ ? गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए बितिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए ततिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए— चउत्थे समए नियमा आहारए एवं दंडओ, जीवा य एगिंदिया य चउत्थे समए सेसा ततिए समए ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ७ उ० १ सू० २६०

सम्मूर्च्छनगर्भोपपादाज्जन्म ॥३१॥

से बेमि संति मे तसापाणा । तं जहा-अंडया पोयया जराउया रसया संसेयया संमुच्छिमा उब्भिया उववाइया एस संसारेत्ति पवुच्चई ।

आचाराग सू० अ० १ उ० ६ सू० ४८

गब्भवक्कन्तिया

उत्तराध्ययन ३६ गाथा ११७

अंडया पोयया जराउया समुच्छिमा उववाइया । दशवै० अ० ४ त्रसाधिकार

सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३२॥

कइविहा णं भंते ! जोणी पराणत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पराणत्ता, तं जहा-सीया जोणी उसिणा जोणी सीओसिणा जोणी। तिविहा जोणी पराणत्ता, तं जहा–सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, मीसिया जोणी। तिविहा जोणी पराणत्ता, तं जहा–सवुडा जोणी, वियडा जोणी, सवुडवियडा जोणी ।

प्रज्ञापना योनिपद ६

जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ॥३३॥

अंडया पोयया जराउया । दशवैकालिक अ० ४

गब्भवक्कंतियाय । प्रज्ञापना १ पद

देवनारकाणामुपपादः ॥३४॥

दोरहं उववाए पराणत्ते देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८५

शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥३५॥

संमुच्छिमाय प्रज्ञापना पद १

सूत्रकृताग श्रुत० २ अ० ३

औदारिकवैक्रियिकाऽऽहारकतैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥३६॥

कति ण भंते ! सरीरया पराणत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा पराणत्ता, तं जहा–ओरालिने, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए ।

प्रज्ञापना शरीरपद २१

परं परं सूक्ष्मम् ॥३७॥

प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ॥३८॥

अनन्तगुणे परे ॥३९॥

सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्वट्ठयाए वेउव्वियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ओरालियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा तेयाकम्मगसरीरा दोवि तुल्ला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, पदेसट्ठाए सव्वत्थोवा आहारगसरीरा पदेसट्ठाए वेउव्वियसरीरा पदेसट्ठाए असंखेज्जगुणा ओरालियसरीरा पदेसट्ठाए असंखेज्जगुणा तेयगसरीरा पदेसट्ठाए अणंतगुणा कम्मगसरीरा पदेसट्ठाए अणंतगुणा इत्यादि ।

प्रज्ञापना शरीर पद २१

अप्रतीघाते ॥४०॥

अप्पडिहयगई । राजप्रश्नीयसूत्र, सू० ६६

अनादिसम्बन्धे च ॥४१॥

सर्वस्य ॥४२॥

तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भन्ते ! कालओ केविचिरं होइ ? गोयमा ! दुविहे पराणत्ते, तं जहा-अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ८ उ० ६ सू० ३५०

कम्मासरीरप्पयोगबंधे अणाइए सपज्जवसिए अणाइए अपज्जवसिए वा एवं जहा तेयगस्स ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ८ उ० ६ सू० ३५१

तेयगसरीरी दुविहे-अणादीए वा अपज्जवसिए अणादीए वा पज्जवसिए एवं कम्मसरीरी वि इत्यादि ।

जीवाभिगमसूत्र-सर्वजीवाभिगम प्रतिपत्ति ६ अ० ४ सू० २६४

तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्या-

ऽऽचतुर्भ्यः ॥४३॥

जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि, जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स ओरालियसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि। जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि, जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं णियमा अत्थि। जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं, जस्स तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं णियमा अत्थि, जस्स पुण तेयगसरीरं तस्स ओरालिय सरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि। एवं कम्मसरीरे

वि। जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं, जस्स आहारगसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं ? गोयमा ! जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं णत्थि, जस्स पुण आहारगसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं णत्थि। तेयाकम्माइं जहा ओरालिएणं सम्मं तहेव, आहारगसरीरेण वि सम्मं तेयाकम्माइं तहेव उच्चारियव्वा। जस्स णं भंते ! तेयगसरीरं तस्स कम्मगसरीरं जस्स कम्मगसरीरं तस्स तेयगसरीरं ? गोयमा ! जस्स तेयगसरीरं तस्स कम्मगसरीरं णियमा अत्थि, जस्स वि कम्मगसरीरं तस्स वि तेयगसरीरं णियमा अत्थि।

प्रज्ञा० प० २१

निरुपभोगमन्त्यम् ॥४४॥

विग्गहगइसमावन्नगाणं नेरइयाणं दोसरीरा

पराणत्ता, तं जहा—तेयए चेव कम्मए चेव। निरंतरं जाव वेमाणियाणं। स्था० स्थान उद्दे० १ सू० ७६

जीवे णं भंते! गब्भ वक्कममाणे किं ससरीरी वक्कमइ, असरीरी वक्कमइ? गोयमा! सिय ससरीरी वक्कमइ सिय असरीरी वक्कमइ। से केणट्ठेणं? गोयमा! ओरालियवेउव्विय-आहारयाइं पडुच्च असरीरी वक्कमइ। तेयाकम्माइं पडुच्च ससरीरी वक्कमइ। भगवती० श० १ उद्दे० ७

गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् ॥४५॥

उरालिअसरीरे णं भंते! कतिविहे पराणत्ते? गोयमा! दुविहे पराणत्ते, तं जहा—समुच्छिम गब्भवक्कंतिय। प्रज्ञा० पद २१

औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥४६॥

णेरइयाणं दो सरीरगा पराणत्ता, तं जहा—

अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भंतरए कम्मए बाहिरए वेउव्विए, एवं देवाणं ।

स्था० स्थान २, उद्दे० १ सू० ७५

लब्धिप्रत्ययश्च ॥४७॥

वेउव्वियलद्धीए ।

औप० सू० ४०

तैजसमपि ॥४८॥

तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे संखित्तविउलते-उलेस्से भवति, तं जहा—आयावणताते १ खंति-खमाते २ अपाणगेणं तवो कम्मेणं ३ ।

स्था० स्थान ३ उद्दे० ३ सू० १८२

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥४९॥

आहारगसरीरे णं भंते ! कतिविहे पएणत्ते ? गोयमा ! एगागारे पएणत्ते पमत्तसंजय सम-दिट्ठि समचउरंस संठाण संठिए पएणत्ते ।

प्रज्ञा० पद २१ सू० २७३

नारकसम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि ॥५०॥

तिविहा नपुंसगा पएणत्ता, तं जहा–णेरतिय-नपुंसगा तिरिक्खजोणियनपुंसगा मणुस्सनपुंसगा।

स्था० स्थान ३ उद्दे० १ सू० १३१

न देवाः ॥५१॥

शेषास्त्रिवेदाः ॥५२॥

कइविहे ण भंते ! वेए पएणत्ते ? गोयमा ! तिविहे वेए पएणत्ते, तं जहा–इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसकवेए । नेरइया णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरि-

सवेया णपुंसगवेया पराणत्ता ? गोयमा ! णो इत्थी-
वेया णो पुंवेए णपुंसगवेया पराणत्ता। असुरकुमारा
णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया ?
गोयमा ! इत्थीवेया पुरिसवेया जाव णो णपुंसग-
वेया थणियकुमारा। पुढवी आऊ तेऊ वाऊ वण-
स्सई वितिचउरिंदियसमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख-
संमुच्छिममणुस्सा णपुंसगवेया। गब्भवक्कंतिय-
मणुस्सा पंचिंदियतिरिया य तिवेया। जहा असुर-
कुमारा तहा वाणमंतरा जोइसियवेमाणियावि।

समः सू० १५६

औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येय-
वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥५३॥

दो अहाउयं पालेंति देवाणं चेव णेरइयाणं चेव।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८५

देवा नेरइयावि य असंखवासाउया य तिरमणुआ ।
उत्तमपुरिसा य तहा चरमसरीरा य निरुवकम्मा ॥

इति ठाणांगवित्तीए

इति श्री जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
द्वितीयोऽध्याय समाप्त ।

तृतीयोऽध्यायः
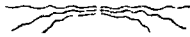
रत्नशर्कराबालुकापङ्कधूमतमोमहा-तमःप्रभाभूमयो घनाम्बुवाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ॥१॥

कहि णं भंते ! नेरइया परिवसति ? गोयमा ! सट्ठाणे ण सत्तसु पुढवीसु, तं जहा—रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, बालुयप्पभाए, पंकप्पभाए, धूमप्पभाए, तमप्पभाए, तमतमप्पभाए ।

प्रज्ञा० नरका० पद २

अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, अहे घणोदधीति वा घणवातेति वा तणुवातेति

वा ओवासंतरेति वा । हंता अत्थि एवं जाव अहे सत्तमाए । जीवाभि० प्रतिप० २ सू० ७०-७१

तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदशदश-त्रिपञ्चोनैकनरकशतसहस्राणि पंच चैव यथाक्रमम् ॥२॥

तीसा य पन्नवीसा पएणरस दसेव तिरिण य हवंति ।

पंचूणसहसहस्सं पचेव अणुत्तरा णरगा ।

जीवा० प्रति० ३ सू० ६६

प्रज्ञा० पद २ नरकाधिकार

व्या० प्र० श० १ उ० ५ सू० ४३

नारकाः नित्याऽशुभतरलेश्यापरि-णामदेहवेदनाविक्रियाः ॥३॥

परस्परोदीरितदुःखाः ॥४॥

अरणमरणस्स कायं अभिहणमाणा वेयणं उदीरेंति इत्यादि ।

जीवाभिगम० प्रति० ३ उद्दे० २ सू० ८६

इमेहि विविहेहि आउहेहि किं ते मोग्गरभुसंढिकरकय सत्ति हलगय मुसल चक्क कुन्त तोमर सूल लउड भिंडिमालि सब्वल पट्टिस चम्मिट्ठ दुहण मुट्ठिय असिखेडग खग्ग चाव नाराय कणगकप्पिणि वासि परसु टंक तिक्ख निम्मल अरणेहिं एवमादिहि असुभेहिं वेउव्विएहि पहरणसत्तेहि अणुबन्धतिव्ववेरा परोप्पर वेयणं उदीरन्ति ।

प्रश्न० अ० १ नरकाधिकार

ते णं णरगा अंतोवट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणा सठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसप्पहा, मेदवसापूयपडलरु-

हिरमंसचिक्खललित्ताणुलेवणतला, असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊगगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा असुभाओ णरगेसु वेअणाओ इत्यादि। प्रज्ञा० पद २ नरकाधिकार

नेरइयाणं तओ लेसाओ पण्णत्ता, तं जहा—कण्हलेस्सा नीललेस्सा काऊलेस्सा।

स्था० स्थान ३ उ० १ सू० १३२

अतिसीतं, अतिउण्हं, अतितण्हा, अतिखुहा, अतिभयं वा, णिरए णेरइयाणं दुक्खसयाइं अविस्सामं।

जीवा० प्रतिपत्ति ३ उ० १ सूत्र १३२

संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः ॥५॥

प्रश्न-किं पत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गया य गमिस्संति य ?

उत्तर-गोयमा! पुव्ववेरियस्स वा वेदणउदीरणयाए, पुव्वसंगइस्स वा वेदणउवसामणयाए, एवं खलु असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गया य, गमिस्सति य ।

व्याख्या० श० ३ उ० २ सू० १४२

तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ॥६॥

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥१६०॥
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥१६१॥
सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेणं, तिण्णेव सागरोवमा ॥१६२॥

दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव सागरोवमा ॥१६३॥
सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेणं, दस चेव सागरोवमा ॥१६४॥
बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥१६५॥
तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेण, बावीसं सागरोवमा ॥१६६॥

उत्तरा० अ० ३६

जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥७॥

असंखेज्जा जंबुद्दीवा नामधेज्जेहिं पएणत्ता, केवतिया णं भंते ! लवणसमुद्दा पएणत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा लवणसमुद्दा नामधेज्जेहि पएणत्ता, एवं धायतिसंडावि, एवं जाव असंखेज्जा सूरदीवा नामधे-

ज्जेहिं य । एगे देवे दीवे पराणत्ते, एगे देवोदे समुद्दे पराणत्ते, एवं णागे जक्खे भूते जाव एगे सयंभूरमणे दीवे एगे सयंभूरमणसमुद्दे णामधेज्जेणं पराणत्ते ।

जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १८६ द्वीप०

जावतिया लोगे सुभा णामा सुभा वराणा जाव सुभा फासा एवतिया दीवसमुद्दा णामधेज्जेहिं पराणत्ता । जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १८६

द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥

जंबुद्दीवं णाम दीवं लवणे णाम समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सब्वतो समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठति । जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १५४

जंबुद्दीवाइया दीवा लवणादीया समुद्दा संठाण-नो एकविहविधाणा वित्थारतो अणेगविधविधाणा

दुगुणादुगुणे पडुप्पाएमाणा पवित्थरमाणा ओभासमाणवीचीया। जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १२३

तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥

जबुद्दीवे सव्वदीवसमुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डाए वट्टे एग जोयणसयसहस्सं आयामविक्खभेण इत्यादि। जम्बू० सू० ३

जबुद्दीवस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं जम्बुद्दीवे मन्दरे णाम्म पव्वए पगणत्ते। णवणउतिजोअणसहस्साइं उद्ध उच्चतेणं एग जोअणसहस्स उव्वेहेणं। जम्बू० सू० १०३

भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥

जम्बुद्दीवे सत्त वासा पगणत्ता, तं जहा—भरहे

एरवते हेमवते हेरन्नवते हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे । स्था० स्थान ७ सू० ५५५

तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ॥११॥

विभयमाणे । जम्बूद्वीप० सू० १५

पाईण पडीणायए । जम्बूद्वीप० सू० ७२

जम्बुद्दीवे छ वासहरपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पि सिहरी ।

स्था० स्थान ६ सू० ५२४

हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ॥१२॥

मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः ॥१३॥

चुल्लहिमवंते जंबुद्दीवे सव्वकणगामए अच्छे सण्हे तहेव जाव पडिरूवे। इत्यादि।

जम्बू० वक्खस्कार ४ सू० ७२

महाहिमवंते णामं सव्वरयणामए।

जम्बू० सू० ७६

निसहे णामं सव्वतवणिज्जमए।

जम्बू० सू० ८३

णीलवंते णाम सव्ववेरुलिआमए।

जम्बू० सू० ११०

रूप्पिणामं सव्वरूप्पामए।

जम्बू० सू० १११

सिहरी णाम सव्वरयणामए।

जम्बू० सू० १११

बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णा-तिवट्टंति आयामविक्खंभउव्वेहसंठाणपरिणाहेणं ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८७

उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ वणसडेहिं सपरिक्खित्ते । जम्बू० प्र० सू० ७२

पद्ममहापद्मतिगिंछकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥

जबुद्दीवे छ महद्दहा पराणत्ता, तं जहा-पउमद्दहे महापउमद्दहे तिगिच्छद्दहे केसरिद्दहे पोंडरीयद्दहे महापोंडरीयद्दहे । स्था० स्थान० ६ सू० ५२४

प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥

दशयोजनावगाहः ॥१६॥

तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए इत्थ णं इक्के महे पउमद्दहे णामं दहे पएणत्ते पाईणपडिणायए उदीणदाहिणविच्छिएणे इक्कं जोयणसहस्सं आयामेणं पंच जोअण-सयाइं विक्खभेणं दस जोअणाइं उव्वेहेणं अच्छे।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति पद्महदाधिकार

तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥१७॥

तस्स पउमद्दहस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ महं एगे पउमे पएणत्ते, जोअणं आयामविक्खंभेणं अद्धजोअणं बाहल्लेणं दसजोअणाइं उव्वेहेणं दोकोसे ऊसिए जलताओ साइरेगाइं दसजोअणाइं सव्व-ग्गेणं पएणत्ता। जम्बू० पद्महदाधिकार सू० ७३

तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥१८॥

महाहिमवंतस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगे महापउमद्दहे णाम दहे पण्णत्ते, दोजोअण सहस्साइं आयामेणं एग जोअणसहस्सं विक्खंभेण दस जोअणाइं उव्वेहेण अच्छे रययामयकूले एवं आयामविक्खंभविहूणा जा चेव पउमद्दहस्स वत्तव्वया सा चेव णेअव्वा, पउमप्पमाण दो जोअणाइ अट्ठो जाव महापउमद्दहवण्णाभाइ हिरी अ इत्थ देवी जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसइ ।

जम्बू० महा० सू० ८०

तिगिछिद्दहे णाम दहे पण्णत्ते चत्तारि जोअणसहस्साइ आयामेणं दोजोअणसहस्साइं विक्खभेणं दसजोअणाइं उव्वेहेणं धिई अ इत्थ देवी पलिओवमट्ठिइया परिवसइ ।

जम्बू० सू० ८३ से ११० षड्हृदाधिकार

तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृति-

कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ॥१९॥

तत्थ णं छ देवयाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति । तं जहा–सिरि हिरि धिति कित्ति बुद्धि लच्छी ।

स्थानांग स्थान ६ सू० ५२४

गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ॥२०॥

द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥२१॥

शेषास्त्वपरगाः ॥२२॥

जबुद्दीवे सत्त महानदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समुप्पेंति, तं जहा–गगा रोहिता हिरी सीता णरकंता सुवरणकूला रत्ता । जंबुद्दीवे सत्त महानदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समुप्पेंति, त जहा–सिंधू रोहितसा हरिकंता सीतोदा णारीकता रुप्पकूला रत्तवती ।

स्थानाग स्थान ७ सू० ५५५

चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गंगासिन्ध्वादयो नद्यः ॥२३॥

जबुद्दीवे भरहेरवएसु वासेसु कइ महाणईओ पगणत्ताओ । गोअमा ! चत्तारि महाणईओ पगणत्ताओ, त जहा–गंगा सिंधू रत्ता रत्तवई । तत्थ णं एगमेगा महाणई चउद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दं समुप्पेइ ।

जम्बू० प्र० वक्षस्कार ६ सू० १२५

भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशत-विस्तारः षट् चैकोनविंशतिभागा योज-नस्य ॥२४॥

जंबुद्दीवे दीवे भरहे णाम वासे जंबुद्दीवदीव-णउयमयभागे पञ्चछब्बीसे जोअणसए छच्च एगूण-वीसइभाए जोअणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बू० सू० १२

तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ॥२५॥

जंबुद्दीवे दीवे चुल्लहेमवन्त णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते पाईणपडीणायए उदीणदाहिण विच्छिण्णे दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थि-मिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्च-

त्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे एगं जोयणसयं उड्ढं उच्च-त्तेणं पणवीस जोयणाइं उव्वेहणं-एगं जोयण-सहस्सं वावन्नं जोयणाइं दुवालसय एगूण वीसई भाए जोयणस्स विक्खंभेण।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति चूलवनाधिकार

जंबुद्दीवे दीवे हेमवए णामं वासे पगणत्ते-पाईण पडीणायए उदीणदाहिणविच्छिगणे पलियकसठण-सठिए दुहालवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्द पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए को-डीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे-दोणिण जोयण-सहस्साइं एगं च पंचुत्तर जोयणसयपच्चयए गूण-वीसईभाए जोयणस्स विक्खभेण ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति हेमवर्षाधिकार

जंबुद्दीवे दीवे महाहिमवते णाम वासहरपव्वए पगणत्ते-पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिगणे

दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे दोजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पणासं जोयणं उव्वेहेणं—चत्तारि जोयणसहस्साइं दोण्णिय दसुत्तर जोयणसए दसयएगूणवीसइ भाए जोयणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति महाहिमवताधिकार

जंबुद्दीवे दीवे हरिवासं णाम वासे पण्णत्ते—एवं जाव पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे—अट्ठजोयणसहस्साइं चत्तारि एगवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोयणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बूद्वीप हरिवर्षाधिकार—

जंबुद्दीवे दीवे णिसहे णाम वासहरपव्वए पण्णत्ते पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा-लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं

उव्वेहणं—सोलसजोयणसहस्साइं अट्ठयबयाले जोयणसए दोरिण य एगूणवीसइ भाए जोयणस्स विक्खभेणं।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति निषधाधिकार २

जंबुद्दीवे दीवे—महाविदेहवासे पराणत्ते—पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिराणे पलियंकसंठाण सठिए दुहा लवणसमुद्द पुट्ठे पुरत्थ जाव पुट्ठे पच्च-त्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिरथा जाव पुट्ठे।

तित्तीसं जोयणसहस्साइं छच्च चुलसीए—जोय-णसए चत्तारिय एगूणवीसइ भाए जोयणस्स विक्खभेणं।

जम्बू० महाविदेहाधिकार

उत्तरा दक्षिणतुल्याः ॥२६॥

जंबुमदरस्स पव्वयस्स य उत्तरदाहिणे णं दो वासहरपव्वया बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्न-

मन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खभुच्चतोव्वेहसंठाण-परिणाहेणं, त जहा-चुल्लहिमवते चेव सिहरिच्चेव, एवं महाहिमवंते चेव रुप्पिच्चेव, एवं निसढे चेव णीलवंते चेव इत्यादि ।

स्था० स्थान २ उद्देश्य ३ सूत्र ८७

भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥२७॥

ताभ्यामपरा भूमियोऽवस्थिताः ॥२८॥

जबुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुआसया सुसमसुसममुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा-देवकुराए चेव, उत्तरकुराए चेव ॥

जबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुयासया सुसममुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, त जहा-हरिवासे चेव रम्मगवासे चेव ॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुयासया सुसमदुसममुत्तममिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा–हेमवए चेव एरन्नवए चेव ॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुयासया दुसमसुसममुत्तममिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा–पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव ॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहं पि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा–भरहे चेव एरवए चेव ॥

स्थानांग स्थान २ सूत्र ८९

जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणवि, णेवत्थि ओसप्पिणी णेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते ॥

व्या० प्र० श० ५ उद्देश्य १ सू० १७८

एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवत-

कहारिवर्षकदैवकुरवकाः ॥२९॥

तथोत्तराः ॥३०॥

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पराणत्ता हिमवए चेव हेरन्नवते चेव हरिवासे चेव रम्मयवासे चेव देवकुरा चेव उत्तरकुए चेव एगं पलिओवमं ठिई पराणत्ता दो पलिओवमाइ ठिई पराणत्ता, तिरिण पलिओवमाइं ठिई पराणत्ता ।

जम्बू० द्वीप० वक्षस्कार ४

विदेहेषु संख्येयकालाः ॥३१॥

महाविदेहे मणुआणं केविइय कालं ठिई पराणत्ता ? गोयमा ! जहराणेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी आउअं पालेति ।

जम्बू० वक्षस्कार ४ सूत्र ८५

भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः ॥३२॥

जम्बुद्दीवे णं भंते ! दीवे भरहप्पमाणमेत्तेहिं खडेहिं केवइयं खंडगणिए णं पण्णत्ते ? गोयमा ! णउअं खंडसयं खंडगणिएणं पण्णत्ते ।

जम्बू० खडयोजनाधिकार सू० १२५

द्विर्धातकीखण्डे ॥३३॥

धायइखंडे दीवे पुरच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता, बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरावए चेव धातकीखडदीवे पच्चच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरावए चेव । इच्चाइ ।

स्था० स्थान २ उद्दे० ३ सू० ९२

पुष्करार्द्धे च ॥३४॥

पुक्खरवरदीवड्ढ पुरच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं दो वासा पएणत्ता, बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरावए चेव तहेव जाव दो कुडाओ पएणत्ता।

स्था० स्थान २ उद्दे० ३ सू० ६३

प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥३५॥

माणुसुत्तरस्स ण पव्वयस्स अंतो मणुआ।

जीवा० प्रति० ३ मानुषोत्तरा० उद्दे० २ सूत्र १७८

आर्या म्लेच्छाश्च ॥३६॥

ते समासओ दुविहा पएणत्ता, तं जहा—आरिआ य मिलक्खू य।

प्रज्ञा० पद १ मनुष्याधिकार

भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥३७॥

से किं तं कम्मभूमगा ? कम्मभूमगा पण्णरस-विहा पण्णत्ता, तं जहा—पंचहिं भरहेहिं पंचहिं एरावएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं ।

से किं तं अकम्मभूमगा ? अकम्मभूमगा तीसइ विहा पण्णत्ता, तं जहा—पंचहिं हेमवएहिं, पंचहिं हरिवासेहिं, पंचहि रम्मगवासेहिं, पंचहि एरण्ण-वएहि, पंचहि देवकुरुहिं, पंचहिं उत्तरकुरुहिं । सेत्तं अकम्मभूमगा ।

प्रज्ञा० पद १ मनुष्याधि० सूत्र ३२

नृस्थिती पराऽवरे त्रिपल्योपमान्त-र्मुहूर्ते ॥३८॥

पलिओवमाउ तिन्नि य, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तरा० अध्याय ३६ गाथा १९८

मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।

प्रज्ञा० पद ४ मनुष्याधिकार

तिर्यग्योनिजानाञ्च ॥३९॥

असंखिज्जवासाउय सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पन्नत्ता ।

समवा० सू० समवाय ३

पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई थलयराणं अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तरा० अध्याय ३६ गाथा १८३

गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय ति-

रिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? जहरणेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिरिण पलिओवमाइं।

प्रज्ञापना स्थितिपद ४ तिर्यगधिकार

इति श्री जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
तृतीयोऽध्याय समाप्त ।

चतुर्थोऽध्यायः
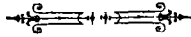
देवाश्चतुर्णिकायाः ॥१॥

चउव्विहा देवा पराणत्ता, तं जहा-भवणवई वाणमंतर जोइस वेमाणिया।

व्याख्या० श० २ उ० ७

आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्या ॥२॥

भवणवइ वाणमंतर चत्तारि लेस्साओ जोतिसियाणं एगा तेउलेसा वेमाणियाणं तिन्नि उवरिमलेसाओ।   स्था० स्थान १ सू० ५१

दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ॥३॥

दसहा उभवणवासी अट्ठहा वणचारिणो ।
पंचविहा जोइसिया दुविाह वेमाणिया तहा ॥२०३॥
वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगायबोधव्वा कप्पाईया तहेव य ॥२०७॥
कप्पोवगा वारसहा सोहम्मीसाणगा तहा ।
सणकुमारमाहिंदा बम्भलोगा य लंतगा ॥२०८॥
महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव इह कप्पोवगासुरा ॥२०९॥

उत्तराध्ययन सूत्र अध्या० ३६

भवणवई दसविहा पण्णत्ता वाणमन्तरा अट्ठविहा पण्णत्ता, जोइसिया पंचविहा पण्णत्ता वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-कप्पोववण्णगा य कप्पाइया य। से किं तं कप्पोववण्णगा? बारसविहा पण्णत्ता, तं जहा-सोहम्मा, ईसाणा, सणकुमारा, माहिंदा, बंभलोगा, लंतया, महासुक्का,

सहस्सारा, आणया, पाणया, आरणा, अच्चुत्ता।

प्रज्ञा० प्रथमपद देवाधिकार

इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदा-त्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियो-ग्यकिल्विषिकाश्चैकशः ॥४॥

देविंदा एवं सामाणिया तायत्तीसगा लोगपाला परिसोववन्नगा अणियाहिवई आयरक्खा। स्था० स्थान ३ उ० १ सू० १३४

देवकिव्विसिए आभिजोगिए।

औपपा० जीवोप० सू० ४१

चउव्विहा देवाण ठिती पएणत्ता, तं जहा-देवे णाममेगे देवसिणाते णाममेगे देवपुरोहिते णाममेगे देवपज्जलणे णाममेगे।

स्था० स्थान ४ उ० १ सू० २४८

अवसेसाय देवा देवीओ

जम्बू० प्र० सू० ११७ (आगमोदयसमिति)

त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यंतर-ज्योतिष्काः ॥५॥

कहि णं भंते! वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहि णं भंते! वाणमंतरा देवा परिवसंति? साणं २ सामाणिय साहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सपरिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणि आहिवईणं साणं २ आयरक्ख देवसाहस्सीणं अराणे सिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहुवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाइसरसेणावच्चं .

प्रज्ञापना सूत्र पद २ सू० ३७

जोसियाणं देवाणं . . तत्थ साणं २ विमाण

वास सहस्साणं साणं २ सामाणिय साहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्ख देव साहस्सीणं अणणे सिंचबहूणं जोइसियाणं देवाणं देवीणय अहेवच्चं जाव विहरति ।

प्रज्ञापना सूत्र पद २ सू० ८२

पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥६॥

दो असुरकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा—चमरे चेव बली चेव । दो णागकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा—धरणे चेव भूयाणंदे चेव । दो सुवन्नकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव । दो विज्जुकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-हरिच्चेव हरिसहे चेव । दो अग्गिकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-अग्गिसिहे चेव अग्गिमाणवे चेव । दो दीवकुमारिंदा

पएणत्ता, तं जहा-पुन्ने चेव विसिट्ठे चेव । दो उद-हिकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-जलकंते चेव जल-प्पभे चेव। दो दिसाकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-अमियगती चेव अमियवाहणे चेव। दो वातकुमा-रिंदा पएणत्ता, तं जहा-वेलम्बे चेव पभंजणे चेव। दो थणियकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-घोसे चेव महाघोसे चेव। दो पिसाइंदा पएणत्ता, तं जहा-काले चेव महाकाले चेव । दो भूइंदा पएणत्ता, तं जहा-सुरूवे चेव पडिरूवे चेव। दो जक्खिंदा पएणत्ता, तं जहा-पुन्नभद्दे चेव माणिभद्दे चेव । दो रक्खसिंदा पएणत्ता, तं जहा-भीमे चेव महाभीमे चेव । दो किन्नरिंदा पएणत्ता, तं जहा-किन्नरे चेव किंपुरिसे चेव। दो किंपुरिसिंदा पएणत्ता, तं जहा-सप्पुरिसे चेव महापुरिसे चेव। दो महोरगिंदा पएणत्ता, तं जहा-अतिकाए चेव महाकाए चेव । दो गंधव्विंदा

पएणत्ता, तं जहा-गीतरती चेव गीयजसे चेव ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८४

कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥७॥

शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचाराः ॥८॥

परेऽप्रवीचाराः ॥९॥

कतिविहा णं भंते ! परियारणा पएणत्ता ? गोयमा ! पञ्चविहा पएणत्ता, तं जहा-कायपरियारणा, फासपरियारणा, रूवपरियारणा, सद्दपरियारणा, मणपरियारणा भवणवासि वाणमंतरजोतिसि सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवा कायपरियारणा, सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु देवा फासपरियारणा, बंभलोयलंतगेसु कप्पेसु देवा रूवपरियारणा, महासुक्कसहस्सारेसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारणा, आण-

यणाणयआरणअच्चुएसु देवा मणपरियारणा, गवेज्जग अणुत्तरोववाइया देवा अपरियारगा ।

प्रज्ञापना पद ३४ प्रचारणा विषय

स्था० स्थान २ उ० ४ सू० ११६

भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥

भवणवई दसविहा पएणत्ता, त जहा-असुरकुमारा, नागकुमारा, सुवएणकुमारा, विज्जुकुमारा, अग्गीकुमारा, दीवकुमारा, उदहिकुमारा, दिसाकुमारा, वाउकुमारा, थणियकुमारा ।

प्रज्ञापना प्रथम पद देवाधिकार

व्यन्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ॥११॥

वाणमंतरा अट्ठविहा पएणत्ता, तं जहा-किण्ण-

रा, किम्पुरिसा, महोरगा, गंधव्वा, जक्खा, रक्खसा, भूया, पिसाया। प्रज्ञापना प्रथमपद देवाधिकार

ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥१२॥

जोइसिया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—चंदा, सूरा, गहा, णक्खत्ता, तारा।

प्रज्ञापना प्रथमपद देवाधिकार

मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१३॥

ते मेरु परियडंता पयाहिणावत्तमडला सव्वे।
अणवट्टियजोगेहिं चंदा सूरा गहगणा य ॥१०॥

जीवाभि० तृतीय प्रति० उद्दे० २ सू० १७७

तत्कृतः कालविभागः ॥१४॥

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—"सूरे आइच्चे सूरे", गोयमा! सूरादिया णं समयाइ वा आवलयाइ वा जाव उस्सप्पिणीइ वा अवसप्पिणीइ वा से तेणट्ठेणं जाव आइच्चे।

व्या० प्रज्ञप्ति शत० १२ उ० ६

से किं तं पमाणकाले? दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दिवसप्पमाणकाले राइप्पमाणकाले इच्चाइ।

व्या० प्र० श० ११ उ० ११ सू० ४२४

जम्बू० प्र०, सूर्यप्र०, चन्द्रप्र०

बहिरवस्थिताः ॥१५॥

अंतो मणुस्सखेत्ते हवंति चारोवगा य उववण्णा।
पञ्चविहा जोइसिया चंदा सूरा गहगणा य ॥२१॥
तेण परं जे सेसा चंदाइच्चगहतारणक्खत्ता।
नत्थि गई नवि चारो अवट्ठिया ते मुणेयव्वा ॥२२॥

जीवाभिगम तृतीय प्रतिपत्ति उद्दे० २ सूत्र १७७

वैमानिकाः ॥१६॥

वेमाणिया ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति० शतक २० सूत्र ६७५-६८२

कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥१७॥

वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—कप्पोववण्णगा य कप्पाईया य ।

प्रज्ञापना प्रथम पद सूत्र ५०

उपर्युपरि ॥१८॥

ईसाणस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि इत्यादि ।

प्रज्ञापना पद २ वैमानिकदेवाधिकार

सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्टशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्यु-

तयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥१९॥

सोहम्म ईसाण सणंकुमार माहिंद बंभलोय लंतग महासुक्क सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुय हेट्ठिमगेवेज्जग मज्झिमगेवेज्झग उवरिमगेवेज्झग विजय वेजयंत जयंत अपराजिय सव्वट्ठसिद्धदेवा य।

प्रज्ञा० पद ६ अनुयोग० सू० १०३ औप० सिद्धाधिकार

स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः ॥२०॥

गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः॥

महिड्ढीया महज्जुइया जाव महाणुभागा

इड्ढीए पण्णत्ते, जाव अच्चुओ, गेवेज्जणुत्तरा य सव्वे महिड्ढीया . ।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ सूत्र २१५ वैमानिकाधिकार

सोहम्मीसाणेसु देवा केरिसए कामभोगे पच्च-णुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! इट्ठा सद्दा इट्ठा रूवा जाव फासा एवं जाव गेवेज्जा अणुत्तरोववातिया ण अणुत्तरा सद्दा एव जाव अणुत्तरा फासा ।

जीवाविगम० प्रतिपत्ति ३ उद्द० २ सूत्र २१६

प्रज्ञापना पद २ देवाधिकार

असुरकुमार भवणवासि देव० पंचिं० वेउव्विय सरीरस्स णं भंते ! के महा० ? गो० ? असुरकुमा-राणं देवाणं दुविहा सरीरोगाहणा पं०, तं०—भव-धारणिज्जा य उत्तर वेउव्विया य तत्थ णं जासा भवधारणिज्जा सा ज० अंगुल० असं० उक्को० सत्त-रयणीओ, तत्थ ण जासा उत्तर वेउव्विता सा, जह० अंगुल० संखे० उक्को० जोयणसतसहस्सं, एव जाव

थणिय कुमाराणं, एवं ओहियाणं वाणमतराणं एवं जोइसियाणवि, सोहम्मीसाण देवाणं एवं चेव उत्तरावेउव्विता जाव अच्चुओ कप्पो, नवर सणं-कुमारे भवधारणिज्जा जह० अगु० असं० उक्को० छरयणीओ, एव माहिंदेवि, बंभलोयलंतगेसु पंच-रयणीओ. महासुक्कसहस्सारेसु चत्तारि रयणीओ, आणय पाणय आरणच्चुएसु तिण्णि रयणीओ गेवि-ज्जगकप्पातीत वेमाणिय देव पचिंदिय वेउ० सरी० के महा० ? गो० ! गेवेज्जगदेवाण एगा भवणिज्जा सरीरोगाहणा पं० सा जह० अगुल० असं० उक्को० दो० रयणी, एव अणुत्तरोववाइयदेवाणवि सावरं एक्का रयणी ।

प्रज्ञापना सूत्र शरीर पद २१ सूत्र २७२

तओ विसुद्धाओ ।

प्रज्ञापना १७ लेश्यापद उद्देश ३

देवाणं पुच्छा—गो० ! छ एयाओ चेव देवीणं

पुच्छा, गो० ! चत्तारि कण्ह० जाव तेउलेस्सा, भवणवासीणं भंते ! देवाणं पुच्छा, गोयमा ! एवं चेव एवं भवणवासिणीणवि वाणमंतरा देवाणं पुच्छा, गो० ! एव चेव, वाणमतरीणवि जोइसियाण पुच्छा, गो० ! एगा तेउलेस्सा, एवं जोइसिणीणवि ।

वेमाणियाणं, पुच्छा, गो० ? तिन्नि तं०—तेउ० पम्ह० सुक्कलेसा वेमाणिणीणं पुच्छा, गो० ? एगा-तेउलेस्सा ।

प्रज्ञापना ६ १ लेश्या पद उद्देश २ सूत्र २१६

असुरकुमाराण पुच्छा, गो० ! पल्लगसंठिते, एवं जाव थणियकुमाराणं , वाणमतराणं पुच्छा, गो० ! पडहग सं० जोतिसियाणं पुच्छा ? गो० ! झल्लरिसंठाण सं० पं० सोहम्मगदेवाण पुच्छा ! गो० ! उड्ढमुयगागारसठिए पं० एवं जाव अच्चुयदेवाणं गेवेज्जगदेवाणं पुच्छा गो० ! पुप्फचंगेरि संठिए पं० अणुत्तरोववाइयाणं पुच्छा ?

गो० ! जवनालिया संठिते ओही पं० ।

प्रज्ञापना सूत्र पद ३३ (सूत्र ३१६)

असुरकुमाराणं भंते ! ओहिणा केवज्य खेत्तं जा० पा० ? गोयमा ! जह० पणवीसं जोयणाइं उक्को० असंखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जा० पा० नागकुमाराणं–जह० पणवीसं जोयणाइं उ० संखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जा० पा० एवं जाव थणियकुमारा। वाणमतराण जहा नागकुमारा, जोइसियाण भंते ! केवतितं खेत्तं ओ० जा० पा० ? गो० ! ज० संखेज्जे दीवसमुद्दे उक्कोसेण वि संखेज्जे दीवसमुद्दे, सोहम्मगदेवाणं भंते ! केव० खेत्तं ओ० जा० पा० ? गो ! ज० अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्को० अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए हिट्ठिले चरमंते तिरियं जाव असंखिज्जे दीवसमुद्दे उड्ढं जाव सगाइं विमाणाइं ओहिणा जाणंति पासंति, एवं ईसाणगदेवावि सणंकुमारदेवावि एवं चेव, नवरं

जाव अहे दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए हिट्ठिल्ले चरमंते, एवं माहिंददेवावि, बंभलोयलंतगदेवा तच्चाए पुढवीए हिट्ठिल्ले चरमंते महासुक्कसहस्सारगदेवा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरमंते आणय पाणय आरणच्चुयदेवा अहे जाव पंचमाए धूमप्पभाए हेट्ठिल्ले चरमते हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जगदेवा अधे जाव छट्ठाए तमाए पुढवीए हेट्ठिल्ले जाव चरमंते उवरिमगेविज्जगदेवाणं भंते ! केवतियं खेत्त ओहिणा जा० पा० ? गो० ! ज० अंगुलस्स असंखेज्जतिभागे उ० अधे सत्तमाए हे० च० तिरिय जाव असंखेज्जे दीवसमुद्दे उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं ओ० जा० पा० अणुत्तरोववाइयदेवाणं भन्ते के० खेत्त ओ० जा० पा० ? गो० संभिन्नं लोगनालि ओ० जा० पा०

प्रज्ञापना अवधिपद ३३ सू० ३१८

पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥

सोहम्मीसाणदेवाणं कति लेस्साओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! एगा तेऊलेस्सा पण्णत्ता । सणकुमारमाहिंदेसु एगा पम्हलेस्सा एवं बंभलोगे वि पम्हा । सेसेसु एक्का सुक्कलेस्सा अणुत्तरोववातियाणं एक्का परमसुक्कलेस्सा ।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ उद्दे० १ सूत्र २१४

प्रज्ञापना पद १७ उद्दे० १ लेश्याधिकार

प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥

कप्पोपवण्णगा बारसविहा पण्णत्ता ।

प्रज्ञापना प्रथम पद सूत्र ४६

ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ॥२४॥

बंभलोए कप्पे लोगतिता देवा पण्णत्ता ।

स्थानांग स्थान ८ सूत्र ६२३

सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥२५॥

सारस्सयमाइच्चा वण्हीवरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा च ॥

स्थानांग स्थान ६ सूत्र ६८४

एएसुणं अट्ठसु लोगंतिय विमाणेसु अट्ठविहा लोगंतीया देवा परिवसंति, तं जहा—

सारस्सयमाइच्चा वण्हीवरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठाए ॥२८॥

भगवती सूत्र ६ शतक ५ उद्देश

विजयादिषु द्विचरमाः ॥२६॥

विजय वेजयंत जयंत अपराजिय देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा इत्यादि । प्रज्ञापना० पद १५ इन्द्रियपद

औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥२७॥

उववाइया . मणुआ (सेसा) तिरिक्खजोणिया।

दशवैका० अध्याय ४ षट्कायाधिकार

स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनामिता ॥२८॥

असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं ।

नागकुमाराणं देवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नता ? गोयमा ! उक्कोसेणं दोपलिओवमाइं देसूणाइं सुवण्णकुमाराण भंते ! देवाणं केवइयं काल ठिई पन्नता ? गोयमा ! उक्कोसेणं दोपलिओव-

माइं देसूणाइं । एव एएणं अभिलावेण जाव थणियकुमाराणं जहा नागकुमाराण ।

प्रज्ञापना० पद ४ भवनपत्यधिकार, स्थिति विषय

सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ॥२९॥

सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ॥३०॥

त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभि-रधिकानि तु ॥३१॥

आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥

अपरा पल्योपमधिकम् ॥३३॥

परतः परतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ॥३४॥

दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिआ ।
सोहम्मम्मि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥२२०॥
सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया ।
ईसाणम्मि जहन्नेण, साहियं पलिओवमं ॥२२१॥
सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥२२२॥
साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
माहिन्दम्मि जहन्नेणं, साहिया दुन्नि सागरा ॥२२३॥
दस चेव सागराइं, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
बम्भलोए जहन्नेणं, सत्त ऊ सागरोवमा ॥२२४॥
चउदस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
लन्तगम्मि जहन्नेणं, दस ऊ सागरोवमा ॥२२५॥

सत्तरस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
महासुके जहन्नेण, चोद्दस सागरोवमा ॥२२६॥
अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
सहस्सारम्मि जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥२२७॥
सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेणं ठिई भवे।
आणयम्मि जहन्नेण, अट्ठारस सागरोवमा ॥२२८॥
वीस तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
पाणयम्मि जहन्नेणं, सागरा अउणवीसई ॥२२९॥
सागरा इक्कवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे।
आरणम्मि जहन्नेण, वीसई सागरोवमा ॥२३०॥
बावीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
अच्चुयम्मि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥२३१॥
तेवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
पढमम्मि जहन्नेण, बावीस सागरोवमा ॥२३२॥
चउवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
बिइयम्मि जहन्नेणं, तेवीसं सागरोवमा ॥२३३॥

पणवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
तइयम्मि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥२३४॥
छव्वीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
चउत्थम्मि जहन्नेणं, सागरा पणुवीसई ॥२३५॥
सागरा सत्तवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे।
पञ्चमम्मि जहन्नेणं, सागरा उ छव्वीसइ ॥२३६॥
सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
छट्ठम्मि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसइ ॥२३७॥
सागरा अउणतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
सत्तमम्मि जहन्नेण, सागरा अट्ठवीसइ ॥२३८॥
तीसं तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं, सागरा अउण तीसई ॥२३९॥
सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
नवमम्मि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥२४०॥
तेत्तीसा सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे।
चउसुपि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कत्तीसई ॥२४१॥

अजहन्नमणुक्कोसा, तेत्तीस सागरोवमा।
महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४२॥

उत्तराध्ययन सूत्र अध्य० ३६

नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥३५॥

दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥३६॥

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया।
पढमाए जहन्नेणं, दसवास सहस्सिया ॥१६०॥
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
दोच्चाए जहन्नेण, एगं तु सागरोवमं ॥१६१॥

उत्तराध्ययन सूत्र अध्य० ३६

एवं जा जा पुव्वस्स उक्कोसठिई अत्थि ताओ ताओ परओ परओ जहण्णठिई णेअव्वा।

[समन्वयकार]

भवनेषु च ॥३७॥

भोमेज्जाणं जहण्णेणं दसवाससहस्सिया ।

उत्तरा० अध्य० ३६ गाथा २१७

व्यन्तराणाञ्च ॥३८॥

परा पल्योपममधिकम् ॥३९॥

वाणमंतराणं भंते ! देवाणं केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिओवमं ।

प्रज्ञापना० स्थितिपद ४

ज्योतिष्काणाञ्च ॥४०॥

तदष्टभागोऽपरा ॥४१॥

पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥२१९॥

उत्तरा० अध्य० ३६

लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥४२॥

लोगंतिकदेवाणं जहण्णमणुक्कोसेणं अट्ठसागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।

स्था० स्थान ८ सूत्र ६२३

व्याख्या० शतक ६ उ० ५

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये

चतुर्थोऽध्याय समाप्त ।

पञ्चमोऽध्यायः
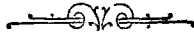
अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ॥१॥

चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पराणत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए।

स्थानाग स्थान ४ उद्दे० १ सूत्र २५१

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ७ उद्दे० १० सूत्र ३०५

द्रव्याणि ॥२॥

जीवाश्च ॥३॥

कइविहाण भंते ! दव्वा पराणत्ता ? गोयमा !

दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—"जीवदव्वा य अजीव-
दव्वा य।
अनुयोग० सूत्र १४१

नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥४॥

रूपिणः पुद्गलाः ॥५॥

पञ्चत्थिकाए न कयाइ नासी न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ धुवे नियए सासए अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे अरूवी।
नन्दिसूत्र० सूत्र ५८

पोग्गलत्थिकायं रूविकायं।

स्थानांगसूत्र स्थान ५ उद्दे० ३ सू० १

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ७ उद्देश्य १०

आ आकाशादेकद्रव्याणि ॥६॥

निष्क्रियाणि च ॥७॥

धम्मो अधम्मो आगासं दव्वं इक्किक्कमाहिय ।
अणंताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजंतवो ॥

उत्तराध्ययन० अध्य० २८ गाथा ८

अवट्ठिए निच्चे ।

नन्दि० द्वादशाङ्गी अधिकार सूत्र ५८

असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ॥८॥

चत्तारि पएसग्गेणं तुल्ला असंखेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, लोगागासे, एगजीवे ।

स्थानाग० स्थान ४ उद्देश्य ३ सूत्र ३३४

आकाशस्याऽनन्ताः ॥९॥

आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे ।

प्रज्ञापना पद ३ सूत्र ४१

संख्येयाऽसंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥१०॥ नाणोः ॥११॥

रूवी अजीवदव्वाण भंते ! कइविहा पराणत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पराणत्ता, त जहा—"खंधा, खंधदेसा, खधप्पएसा, परमाणुपोग्गला, अणंता परमाणुपुग्गला, अणंता दुप्पएसिया खंधा जाव अणंता दसपएसिया खंधा अणंता सखिज्जपएसिया खधा, अणंता असंखिज्जपएसिया खंधा, अणंता अणंतपएसिया खधा ।

प्रज्ञापना ५ वा पद

लोकाकाशेऽवगाहः ॥१२॥

कतिविहेणं भंते ! आगासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प०, त जहा—लोयागासे य अलोयागासे य । लोयागासे ण भंते ? कि जीवा जीवदेसा

जीवपदेसा अजीवा अजीवदेसा अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवावि जीवदेसावि जीवपदेसावि अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपदेसावि जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेदिया अणिंदिया, जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा, जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—रूवी य अरूवी य जे रूवि ते चउव्विहा पएणत्ता, तं जहा—खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला—जे अरूवी ते पंचविहा पएणत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपदेसा अधम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा अद्धासमए ॥

व्याख्या० श० २ उ० १० सू० १२१

अलोगागासे णं भंते ! किं जीवा ? पुच्छा तह

चेव गोयमा ! नो जीवा जाव नो अजीवप्पएसा एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए अणंतेहिं अगुरुलहुय-गुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे ।

व्याख्या० श० २ उ० १० सू० १२२

धम्मो अधम्मो आगास कालो पुग्गलजंतवो ।
एस लोगोत्ति पराणत्तो जिणेहि वरदंसिहि ॥

उत्तराध्ययन अध्य० २८ गाथा ७

धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ॥१३॥

धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया ।
लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥

उत्तराध्ययन अध्ययन ३६ गाथा ७

एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गला-नाम् ॥१४॥

एगपएसो गाढा संखिज्जपएसो गाढा असंखिज्जपएसो गाढा।

प्रज्ञा० पञ्चम पर्यायपद अजीवपर्यवाधिकार

असंख्येयभागादिषु जीवानाम् ॥१५॥

लोअस्स असंखेज्जइभागे।

प्रज्ञापना पद २ जीवस्थानाधिकार

प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥१६॥

दीवं व जीवेवि ज जारिसयं पुव्वकम्म-निबद्ध बोंदिं णिवत्तइ त असखेज्जेहि जीवपदेसेहिं सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा।

राजप्रश्नीयसूत्र सूत्र ७४

गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुप-कारः ॥१७॥

आकाशस्यावगाहः ॥१८॥

शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गला-नाम् ॥१९॥

सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च॥२०॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥२१॥

धम्मत्थिकाए ण जीवाणं आगमणगमणभासुम्मेसमणजोगा वइजोगा कायजोगा जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति। गइलक्खणे ण धम्मत्थिकाए।

अहम्मत्थिकाए णं जीवाणं किं पवत्तति? गोयमा! अहम्मत्थिकाएणं जीवाण ठाणनिसीयणतुयट्टणमणस्स य एगत्तीभावकरणता जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अहम्मत्थिकाये

पवत्तति। ठाणलक्खणे णं अहम्मत्थिकाए।

आगासत्थिकाए णं भंते! जीवाणं अजीवाण य किं पवत्तति? गोयमा! आगासत्थिकाएणं जीवदव्वाण य अजीवदव्वाण य भायणभूए एगेण वि से पुन्ने दोहिवि पुन्ने सयपि माएज्जा। कोडिसएणवि पुन्ने कोडिसहस्सवि माएज्जा॥१॥ अवगाहणालक्खणे णं आगासत्थिकाए।

जीवत्थिकाएणं भंते! जीवाणं किं पवत्तति? गोयमा! जीवत्थिकाएणं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं, एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओगं गच्छति, उवओगलक्खणे णं जीवे।

व्या० प्र० शतक १३ उ० ४ सू० ४८१

जीवे णं अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं एवं सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणप० केवलनाणप० मइअन्नाणप० सुयअण्णा-

णप० विभंगणाणप० चक्खुदंसणप० अचक्खुदंसणप० ओहिदंसणप० केवलदंसणपज्जवाणं उवओगं गच्छइ० ।

व्या० प्र० शतक २ उ० १० सू० १२०

जीवो उवओगलक्खणो । नाणेण दंसणेण च सुहेण य दुहेण य । उत्त० अध्य० २८ गाथा १०

पोग्गलत्थिकाए णं पुच्छा ? गोयमा ! पोग्गलत्थिकाए णं जीवाणं ओरालियवेउव्विय आहारए तेयाकम्मए सोइंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियमणजोगवयजोगकायजोगआणापाणूणं च गहणं पवत्तति । गहणलक्खणे णं पोग्गलत्थिकाए ।

व्या० प्र० शतक १३ उ० ४ सू० ४८१

वर्तनापरिणामक्रियाः परत्वापरत्वे च कालस्य ॥२२॥

वत्तना लक्खणो कालो०।

उत्तरा० अध्य० २८ गाथा १०

स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ॥२३॥

पोग्गले पञ्चवएणे पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे पगणत्ते। व्या० प्र० शतक १२ उ० ५ सू० ४५०

शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायाऽऽतपोद्योतवन्तश्च ॥२४॥

सद्दन्धयार उज्जोओ पभा छाया तवो इ वा।
वएणरसगन्धफासा पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥१२॥
एगत्तं च पुहत्तं च सखा संठाणमेव च।
संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥१३॥

उत्तरा० अध्य० २८

अणवः स्कन्धाश्च ॥२५॥

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—परमाणुपोग्गला नोपरमाणुपोग्गला चेव ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८२

भेदसङ्घातेभ्यः उत्पद्यन्ते ॥२६॥

भेदादणुः ॥२७॥

दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णंति, तं जहा-सइं वा पोग्गला साहन्नंति परेण वा पोग्गला साहन्नंति । सइं वा पोग्गला भिज्जंति परेण वा पोग्गला भिज्जंति । स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८२

एगत्तेण पुहत्तेण खंधाय परमाणु य ।

उत्तरा० अध्य० ३६ गा० ११

भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषः ॥२८॥

चक्खुदंसणं चक्खुदंसणिस्स घड पड कड रहाइएसु दव्वेसु ।

अनुयोग० दर्शन गुणप्पमाण सू० १४४

सद्द्रव्यलक्षणम् ॥२९॥

सद्दव्वं वा ।

व्या० प्र० शत० ८ उ० ६ सत्पदद्वार

उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥३०॥

माउयाणुओगे (उपन्ने वा विगए वा धुवे वा) ।

स्थानाग स्थान १०

तद्भावाऽव्ययं नित्यम् ॥३१॥

परमाणुपोग्गलेणं भंते ! किं सासए असासए ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए वन्नपज्जवेहिं जाव फास-पज्जवेहिं असासए ।

व्या० प्र० शतक १४ उ० ४ सू० ५१२

जीवा० प्र० ३ उ० १ सूत्र ७७

जीवाणं भंते ! किं सासया असासया ? गोयमा !

जीवा सियसासया सिय असासया से केण ट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ-जीवा सियसासया सिय असासया ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया भावट्ठयाए असासया से तेण ट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सियसासया सियअसासया ! नेरइयाणं भंते ! किं सासया असासया ? एवं जहा जीवा तहा नेरइयावि एवं जाव वेमाणिया जाव सियसासया सियअसासया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! ।

व्या० श० ७ उ० २ सू० २७४

अर्पिताऽनर्पितसिद्धेः ॥३२॥

अप्पितणप्पिते। स्था० स्थान० १० सूत्र ७२७

स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः ॥३३॥

न जघन्यगुणानाम् ॥३४॥

गुणसाम्ये सदृशानाम् ॥३५॥

द्व्यधिकादिगुणानान्तु ॥३६॥

बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ॥३७॥

बंधणपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा–णिद्धबंधणपरिणामे लुक्खबंधणपरिणामे य—

समणिद्धयाए बंधो न होति समलुक्खयाएवि ण होति ।
वेमायणिद्धलुक्खत्तणेण बंधो उ खंधाणं ॥१॥
णिद्धस्स णिद्धेण दुयाहिएण,
लुक्खस्स लुक्खेण दुयाहिएण ।
निद्धस्स लुक्खेण उवेइ बंधो,
जहण्णवज्जो विसमो समो वा ॥२॥

प्रज्ञा० परि० पद १३ सूत्र १८५

गुणपर्यायवद्द्रव्यम् ॥३८॥

गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा।
लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया भवे॥

उत्तरा० सूत्र अध्य० २८ गाथा ६

कालश्च ॥३९॥

छव्विहे दव्वे पण्णत्ते, तं जहा-धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पुग्गलत्थिकाए, अद्धासमये अ, सेतं दव्वणामे।

अनुयोग० द्रव्यगुण० सू० १२४

सोऽनन्तसमयः ॥४०॥

अणंता समया।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शत २५ उ० ५ सू० ७४७

द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥४१॥

दव्वस्सिया गुणा।

उत्तराध्ययन अध्ययन २८ गाथा ६

तद्भावः परिणामः ॥४२॥

दुविहे परिणामे पण्णत्ते, तं जहा-जीवपरिणामे य अजीवपरिणामे य ।

प्रज्ञापना परिणाम पद १३ सू० १८१

इति श्री-जनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
पञ्चमोऽध्याय समाप्त ।

षष्ठोऽध्यायः
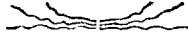
कायवाङ्मनः कर्म योगः ॥१॥

तिविहे जोए पराणत्ते, तं जहा-मणजोए, वइजोए, कायजोए।

व्याख्या प्रज्ञप्ति० शतक० १६ उद्दे० १ सूत्र ५६४

स आस्रवः ॥२॥

पञ्च आसवदारा पराणत्ता, तं जहा-मिच्छत्तं, अविरई, पमाया, कसाया, जोगा।

समवायांग समवाय ५

शुभः पुण्यस्याऽशुभः पापस्य ॥३॥

पुराणं पावासवो तहा।

उत्तराध्ययन अध्ययन २८ गाथा १४

सकषायाऽकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः ॥४॥

जस्स णं कोहमाणमायालोभा वोच्छिन्ना भवन्ति तस्स ण ईरियावहिया किरिया कज्जइ नो संपराइया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवन्ति तस्स ण संपरायकिरिया कज्जइ नो ईरियावहिया ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक ७ उद्दे० १ सूत्र २६७

इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पञ्चचतुःपञ्चपञ्चविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः॥५॥

पञ्चिंदिया पगणत्ता चत्तारि कसाया पगणत्ता पञ्च अविरय पगणत्ता पंचवीसा किरिया पगणत्ता

स्थानांग स्थान २ उद्देश्य १ सूत्र ६०

इन्द्रिय १ कसाय २ अव्वय ३ जोगा ९ पंच १

चऊ २ पंच ३ तिन्निकसाया किरियाओ पणवीस इमाओ अणुक्कमसो। नव तत्त्व प्रकरणगा १४

तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥६॥

जे केइ खुद्दका पाणा अदु वा सन्ति महालया।
सरिसं तेहिं वेरंति असरिसं ती व णेवदे ॥६॥
एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं तु जाणए* ॥७॥

सूत्रकृतांग श्रुतस्कन्ध २ अ० ५ गाथा ६-७

* व्याख्या—ये केचन क्षुद्रकाः सत्त्वाः प्राणिन एकेन्द्रियद्वीन्द्रियादयोऽल्पकाया वा पञ्चेन्द्रिया अथवा महालया महाकाया सन्ति विद्यन्ते, तेषां च क्षुद्रकाणामल्पकायानां कुन्थ्वादीनां महानालयः शरीरं येषां ते महालया हस्त्यादयस्तेषां च व्यापादने, सदृशं, वैरमिति, वज्रं कर्मविरोधलक्षणं वा वैरं तत्सदृशं समानम्, अल्पप्रदेशत्वात्सर्वजन्तूना-

अधिकरणं जीवाऽजीवाः ॥७॥

जीवे अधिकरणं ।

व्या० प्रज्ञ० श० १६ उ० १

एवं अजीवमवि ।

स्थानाग स्थान २ उ० १ सू० ६०

मित्येवमेकान्तेन नो वदेत् । तथा विसदृशम् असदृश तद्व्यापत्तौ वैर कर्मबन्धो विरोधो वा इन्द्रियविज्ञानकायाना विसदृशत्वात् । सत्यपि प्रदेश अल्पत्वेन सदृश वैरमित्येवमपि नो वदेत् । यदि हि वध्यापेक्ष एव कर्मबन्ध स्यात्तदा तत्तद्वशात्कर्मणोऽपि सादृश्यमसादृश्य वा वक्तु युज्यते । न च तद्वशादेव बध , अपि त्वध्यवसायवशादपि । ततश्च तीव्राध्यवसायिनोऽल्पकाय-सत्त्वव्यापादनेऽपि महद्वैरम् । अकामस्य तु महाकायसत्त्वव्या-पादनेऽपि स्वल्पमिति ॥६॥

एतदेव सूत्रेणैव दर्शयितुमाह आभ्यामनन्तरोक्ताभ्या स्थानाभ्यामनयोर्वा स्थानयोरल्पकायमहाकायव्यापादनापादित-

आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोग-कृतकारिताऽनुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रि-स्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥८॥

कर्मबन्धसदृशत्वयोर्व्यवहरणं व्यवहारो निर्युक्तिकत्वान्न युज्यते। तथाहि—न वध्यस्य सदृशत्वमसदृशत्वं चकमेव। कर्मबन्धस्य कारणम्। अपि तु वधकस्य **तीव्रभावो मन्दभावो ज्ञातभावोऽज्ञातभावो** महावीर्यत्वमल्पवीर्यत्वं चेत्येतदपि। तदेव वध्यवधकयोर्विशेषात्कर्मबन्धविशेष इत्येव व्यवस्थिते वध्यमेवाश्रित्य, सदृशत्वासदृशत्वव्यवहारो न विद्यत इति। तथाऽनयोरेव स्थानयो प्रवृत्तस्यानाचार, विजानीयादिति। तथाहि-यज्जीवसाम्यात्कर्मबन्धसदृशत्वमुच्यते, तदयुक्तम्। यतो न हि जीवव्यापत्त्या हिंसोच्यते, तस्य शाश्वतत्वेन व्यापादयितु-मशक्यत्वात्। अपि त्विन्द्रियादिव्यापत्त्या तथा चोक्तम्—पञ्चेन्द्रि-याणि, त्रिविधं बलं च उच्छ्वासनिश्वासमथान्यदायुः। प्राणा

संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य।

उ० अध्य० २४ गाथा २१

तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि।

दशवैकालिक अ० ४

दशेते भगवद्भिरुक्तास्तेषां वियोजीकरणं तु हिंसा ॥१॥ इत्यादि। अपि च भावसव्यपेक्षस्यैव, कर्मबन्धोऽभ्यपेतु युक्त। तथाहि—वैद्यस्यागमसव्यपेक्षस्य, सम्यक क्रिया कुर्वतो, यद्यप्यातुरविपत्तिर्भवति, तथापि, न वैरानुषङ्गो भावदोषाभावाद्। अपरस्य तु सर्पबुद्ध्या रज्जुमपि घ्नतो भावदोषात्कर्मबन्ध। तद्रहितस्य तु न बन्ध इति। उक्त चागमे, उच्चालयमिपाए। इत्यादि तण्डुलमत्स्याख्यानक तु सुप्रसिद्धमेव। तदेवविधवध्यवधकभावापेक्षया स्यात्। सदृश स्यादसदृशत्वमिति। अन्यथाऽनाचार इति ॥७॥

वृत्ति शीलाङ्काचार्य कृत

जस्स णं कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवंति तस्स णं संपराइया किरिया ।

व्या० प्रज्ञप्ति श० ७ उ० १ सूत्र १८

निवर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ॥९॥

णिव्वत्तणाधिकरणिया चेव संजोयणाधिकरणिया चेव । स्था० स्थान २ सू० ६०

आइये निक्खिवेज्जा । उत्तरा० अ० २४ गाथा १४

पवत्तमाणं । उत्तरा० अ० २४ गाथा २१-२३

तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः ॥१०॥

णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! नाणपडिणीययाए णाणनिण्हवणयाए णाणंतराएणं णाणप्पदोसेणं

णाणच्चासायणाए णाणविसंवादणाजोगेणं,
एवं जहा णाणावरणिज्जं नवरं दंसणनाम घेत्तव्वं।

व्या० प्रज्ञप्ति श० ८ उ० ६ सू० ७५-७६

दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेदस्य ॥११॥

परदुक्खणयाए परसोयणयाए परजूरणयाए परतिप्पणयाए परपिट्टणयाए परपरियावणयाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए एवं खलु गोयमा! जीवाणं अस्साया-वेयणिज्जा कम्मा किज्जन्ते।

व्याख्या० श० ७ उ० ६ सू० २८६

भूतव्रत्यनुकम्पादानसरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेदस्य ॥१२॥

पाणाणुकंपाए भूयाणुकंपाए जीवाणुकंपाए सत्ताणुकंपाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरियावणयाए एवं खलु गोयमा! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा किज्जंति।

व्या० प्रज्ञप्ति शतक ७ उ० ६ सू० २८६

केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥१३॥

पंचहि ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोधियत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा–अरहंताणं अवन्नं वदमाणे १, अरहंतपन्नतस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे २, आयरियउवज्झायाणं अवन्नं वदमाणे ३, चउवण्णस्स संघस्स अवण्णं वदमाणे ४, विवक्कतवंभचेराणं देवाणं अवन्नं वदमाणे।

स्था० स्थान ५ उ० २ सू० ४२६

कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१४॥

मोहणिज्जकम्मासरीरप्पयोगपुच्छा, गोयमा! तिव्वकोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमायाए तिव्वलोभाए तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए तिव्वचारित्तमोहणिज्जाए। व्या० प्र० शतक ८ उ० ९ सू० ३५१

बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥१५॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरतियत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा—महारम्भताते महापरिग्गहयाते पंचिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सूत्र ३७३

माया तैर्यग्योनस्य ॥१६॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा-माइल्लताते णियडिल्लताते अलियवयणेणं कूडतुलकूडमाणेणं ।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सू० ३७३

अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥१७॥

स्वभावमार्दवञ्च ॥१८॥

अप्पारम्भा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया ।

औपपातिक सूत्र संख्या १२४

चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताते कम्म पगरेंति त जहा-पगतिभद्दताते पगतिविणीययाए साणुक्कोसयाते अमच्छरिताते ।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सू० ३७३

वेमायाहिं सिक्खाहिं जे नरा गिहिसुव्वया ।
उवेंति माणुसं जोणिं कम्मसच्चाहु पाणिणो ॥

उत्तरा० सू० अध्य० ७ गाथा २०

निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥१९॥

एगतबाले णं मणुस्से नेरइयाउयंपि पकरेइ तिरियाउयपि पकरेइ मणुस्साउयपि पकरेइ देवाउयपि पकरेइ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० १ उ० ८ सूत्र ६३

सरागसंयमसंयमाऽसंयमाऽकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ॥२०॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामणिज्जराए।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सूत्र ३७३

सम्यक्त्वं च ॥२१॥

वेमाणियावि जइ सम्मद्दिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उवव-

ज्जंति किं संजतसम्मद्दिट्ठीहितो असंजयसम्मद्दिट्ठी-पज्जत्तएहिंतो संजयासंजयसम्मद्दिट्ठीपज्जत्तस-खेज्ज० हिंतो उववज्जंति? गोयमा! तीहिंतोवि उव-वज्जंति एवं जाव अच्चुगो कप्पो।

प्रज्ञापना पद ६

योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥२२॥

तद्विपरीतं शुभस्य ॥२३॥

सुभनामकम्मा सरीरपुच्छा? गोयमा! काय-उज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए अविस-वादणजोगेणं सुभनामकम्मा सरीरजावप्पयोगबन्धे, असुभनामकम्मा सरीरपुच्छा? गोयमा! कायअणु-ज्जुययाए जाव विसंवायणाजोगेण असुभनामकम्मा जाव पयोगबन्धे।

व्या० श० ८ उ० ६

दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शील-
व्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसं-
वेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमा-
धिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रव-
चनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभा-
वना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकर-
त्वस्य ॥२४॥

अरहंतसिद्धपवयणगुरुथेरबहुस्सुए तवस्सीसुं ।
वच्छलया य तेसिं अभिक्ख णाणोवओगे य ॥१॥

दंसण विणए आवास्सए य सीलव्वए निरइयारं ।
खणलव तव च्चियाए वेयावच्चे समाही य ॥२॥

अप्पुव्वणाणगहणे सुयभत्ती पवयणे पभावणया ।
एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्त लहइ जीवो ॥३॥

ज्ञाताधर्म कथांग अ० ८ सू० ६४

परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥२५॥

जातिमदेणं कुलमदेण बलमदेणं जाव इस्सरियमदेणं णीयागोयकम्मासरीरजावपयोगबन्धे ।

व्या० शतक ८ उ० ६ सूत्र ३५१

तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥२६॥

जातिअमदेणं कुलअमदेणं बलअमदेण रूवअमदेण तवअमदेणं सुयअमदेणं लाभअमदेण इस्सरियअमदेण उच्चागोयकम्मासरीरजावपयोगबधे ।

व्या० शतक ८ उ० ६ सू० ३५१

विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥२७॥

दाणंतराएणं लाभंतराएणं भोगंतराएणं उवभोगतराएणं वीरियंतराएणं अंतराइयकम्मा सरीरप्पयोगबन्धे । व्या० प्र० श० ८ उ० ६ सू० ३५१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
षष्ठोऽध्याय समाप्त ।

सप्तमोऽध्यायः

हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥१॥

देशसर्वतोऽणुमहती ॥२॥

पंच महव्वया पण्णत्ता, तं जहा–सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं। जाव सव्वातो परिग्गहातो वेरमणं। पंचाणुव्वता पण्णत्ता, तं जहा–थूलातो पाणाइवायातो वेरमण थूलातो मुसावायातो वेरमणं थूलातो अदिन्नादाणातो वेरमणँ सदारसंतोसे इच्छापरिमाणे। स्था० स्थान ५ उ० १ सू० ३८९

तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ॥३॥

पंचजामस्स पणवीस भावणाओ पण्णत्ता ।

समवायांग समवाय २५

(१) तस्स इमा पंच भावणातो पढमस्स वयस्स होंति पाणातिवाय वेरमण परिरक्खणट्ठयाए ।

प्रश्न व्या० १ सवर० सू० २३

(२) तस्स इमा पंच भावणा तो वितियस्स वयस्स अलिय वयणस्स वेरमण परि रक्खणट्ठयाए ।

प्र० व्या० २ सवर० सू० २५

(३) तस्स इमा पंच भावणातो ततियस्स होंति परदव्वहरण वेरमणपरिरक्खणट्ठयाए ।

प्र० व्या० ३ सवर० सू० २६

(४) तस्स इमा पंच भावणाओ चउत्थयस्स होंति अवंभचेर वेरमणपरि रक्खणट्ठयाए ।

प्र० व्या० ४ सवर० सू० २७

(५) तस्स इमा पंच भावणाओ चरिमस्स

वयस्स होंति परिग्गह वेरमणपरि रक्खणट्ठयाए ।

प्रश्न व्या० ५ सवरद्वार सू० २६

वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पञ्च ॥४॥

ईरिया समिई मणगुत्ती वयगुत्ती आलोयभायणभोयण आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई ।

समवायांग, समवाय २५

क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणं च पञ्च ॥५॥

अणुवीति भासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयविवेगे हासविवेगे ।

समवायांग, समय २५

शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धिसद्धर्माऽविसंवादाः पञ्च ॥६॥

उग्गहअणुरणवणया उग्गहसीमजाणणया सयमेव उग्गहं अणुगिरहणया साहम्मियउग्गहं अणुण्णविय परिभुजणया साहारणभत्तपाणं अणुरणविय पडिभुजणया । सम० समय २५

स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पञ्च ॥७॥

इत्थीपसुपंडगससत्तगसयणासणवज्जणया इत्थीकहवज्जणया इत्थीण इंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरयपुव्वकीलिआणं अणणुसरणया पणीताहारवज्जणया । सम० समय २५

मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पञ्च ॥८॥

सोइन्दियरागोवरई चक्खिदियरागोवरई घाणि-दियरागोवरई जिब्भिदियरागोवरई फासिंदियरागो-वरई ।

मम० समय २५

हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ॥९॥ दुःखमेव वा ॥१०॥

संवेगिणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा-इहलोगसंवेगणी परलोगसंवेगणी आतसरीरसंवे-गणी परसरीरसंवेगणी । णिव्वेयणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा-इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ॥१॥ इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोगे दुहफलविवागसजुत्ता भवंति ॥२॥ परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागस-जुत्ता भवंति ॥३॥ परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोये दुहफलविवागसंजुत्ता भवति ॥४॥

इहलोगे सुचिन्ना कम्मा इहलोगे सुहफलवि-वागसजुत्ता भवति ॥१॥ इहलोगे सुचिन्ना कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति, एवं चउभंगो।

स्था० स्थान ४ उ० २ सूत्र २८२

मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाऽविनयेषु ११

मित्तिं भूएहिं कप्पए

सूत्र कृतांग० प्रथम श्रुतिस्कंध अध्या० १५ गाथा ३

सुप्पडियाणंदा । ओप० सू० १ प्र० २०

साणुकोस्सयाए । आप० भगवदुपदेश

मज्झत्थो निज्जरापेही समाहिमणुपालए ।

आचारांग प्र० श्रुतस्कंध अ० ८ उ० ७ गाथा ५

जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्या-र्थम् ॥१२॥

संवेगकारणत्था ।

समवाय सू० विपाकसूत्राधिकार

भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावेत्तु अप्पयं ।

उत्तरा० अध्य० १६ गाथा० ६४

अणिच्चे जीवलोगम्मि ।

जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपायचचलम् ।

उत्तरा० अध्य० १८ गाथा ११, १३

प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥१३॥

तत्थ णं जेते पमत्तसजया ते असुह जोगं पडुच्च आयारम्भा परारम्भा जाव णो अणारंभा ।

व्या० प्र० शतक १ उ० १ सूत्र ४८

असदभिधानमनृतम् ॥१४॥

अलियं असच्चं संधत्तणं असब्भाव अलियं । प्र० व्या० आस्रव० २

अदत्तादानं स्तेयम् ॥१५॥

अदत्तं तेणिक्को । प्र० व्या० आस्रव० ३

मैथुनमब्रह्म ॥१६॥

अबम्भ मेहुणं । प्र० व्या० आस्रवद्वार ४

मूर्च्छा परिग्रहः ॥१७॥

मुच्छा परिग्गहो वुत्तो ।

दश० अध्ययन ६ गाथा २१

निश्शल्यो व्रती ॥१८॥

पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं–मायासल्लेणं नियाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं ।

आवश्यक० चतु० आवश्य० सूत्र ७

आगार्यनगारश्च ॥१९॥

चरित्तधम्मे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा—आगार-चरित्तधम्मे चेव, अणगारचरित्तधम्मे चेव ।

स्थानाग स्थान २ उ० १

अणुव्रतोऽगारी ॥२०॥

आगारधम्मं अणुव्वयाइ इत्यादि ।

औपपातिक सूत्र श्रीवीर देशना

दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिक-प्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणा-तिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ॥२१॥

आगारधम्म दुवालसविहं आइक्खइ, त जहा—पंच अणुव्वयाइं तिरिण गुणवयाइ चत्तारि सिक्खा-वयाइं ।

तिरिण गुणव्वयाइं, तं जहा-अणत्थदंडवेरमणं दिसिव्वय, उपभोगपरिभोगपरिमाणं । चत्तारि सिक्खावयाइं, तं जहा-सामाइय देसावगासिय पोसहोववासे अतिहिसंविभागे ।

औपपातिक श्रीवीरदेशना सूत्र ५७

मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥२२॥

अपच्छिमा मारणंतिआ सलेहणा जूसणाराहणा । औपपा० सू० ५७

शङ्काकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतिचाराः ॥२३॥

सम्मत्तस्स पञ्च अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-संका कंखा वितिगिच्छा,

परपासंडपसंसा, परपासंडसंथवो ।

उपासकदशांग अध्याय १

व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ॥२४॥

बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपान-निरोधाः ॥२५॥

थूलस्स पाणाइवायवेरमणस्स समणेवासएणं पञ्च अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा । त जहा–वहबंधच्छविच्छेए अइभारे भत्तपाणवोच्छेए ।

उपा० अ० १

मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेख-क्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः २६

थूलगमुसावायस्स पंच अइयारा जाणियव्वा । न समायरियव्वा । तं जहा–सहसाभक्खाणे रहसा-

भक्खणे, सदारमंतभेए मोसोवएसेए कूडलेहकरणे य । उपा० अ० १

स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ॥२७॥

थूलगअदिरणादाणस्स पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—तेनाहडे, तक्करप्पउगे विरुद्धरज्जाइकम्मे, कूडतुलकूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे ।

परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताऽपरिगृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ॥२८॥

सदारसंतोसिए पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-इत्तरियपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अणंगकीडा, परविवाहकरणे कामभोएसु तिव्वाभिलासो। उपा० अध्या० १

क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ॥२९॥

इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा-धणधन्नपमाणाइक्कमे खेत्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे हिरण्णसुवण्णपरिमाणाइक्कमे दुप्पयचउप्पयपरिमाणाइक्कमे कुवियपमाणाइक्कमे। उपा० अध्या० १

ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ॥३०॥

दिसिव्वयस्स पंच अइयारा जाणियव्वा। न

समायरियव्वा, तं जहा–उड्ढदिसिपरिमाणाइक्कमे, अहोदिसिपरिमाणाइक्कमे, तिरियदिसिपरिमाणाइक्कमे, खेत्तवुड्ढिस्स, सअंतरद्धा।

उपा० अध्या० १

आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ॥३१॥

देशावगासियस्स समणोवासएण पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा–आणवणपयोगे पेसवणपओगे, सद्दाणुवाए, रूवाणुवाए, बहियापोग्गलपक्खिवे।

उपा० अध्या० १

कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्याऽसमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ३२

अणट्ठादंडवेरमणस्स समणोवासएण पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा–कन्दप्पे

कुक्कुइए मोहरिए संजुत्ताहिगरणे उवभोगपरि-भोगाइरित्ते। उपा० अध्या० १

योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥३३॥

सामाइयस्स पञ्च अइयारा समणोवासएण जाणियव्वा। न समायरियव्वा, तं जहा–मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सति अकरणयाए, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया। उपा० अध्या० १

अप्रत्यवेक्षिताऽप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥३४॥

पोसहोववासस्स समणोवासएण पंच अइयारा

जाणियव्वा न समारियव्वा, तं जहा-अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारे, अप्पमज्जियदुप्पमज्जिय-सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहिय उच्चार-पासवणभूमी, अप्पमज्जियदुप्पमज्जिय उच्चारपास-वणभूमी पोसहोववासस्स सम्म अणणुपालणया ।

उपा० अध्या० १

सचित्तसम्बन्धसम्मिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः ॥३५॥

भोयणतो समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-सचित्ताहारे सचित्तपडिबद्धाहारे उप्पउलिओसहिभक्खणया, दुप्पोलितोसहिभक्खणया, तुच्छोसहिभक्खणया ।

उपा० अध्या० १

सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ॥३६॥

अहासंविभागस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा–सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपेहणया, कालाइक्कमदाणे परोवएसे मच्छरिया। उपा० अध्या० १

जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ॥३७॥

अपच्छिममारणंतियसंलेहणा भूसणाराहणाए पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा– इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे। उपा० अध्या० १

अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥३८॥

समणोवासए णं तहारूवं समणं वा जाव पडि-लाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारएणं तमेव समाहिं पडिलभइ।

व्या० श० ७ उ० १ सूत्र २६३

समणो वासए ण भंते! तहारूवं समण वा जाव पडिलाभेमाणे किं चयति? गोयमा! जीवियं चयति उच्चयं चयति दुक्करं करेति दुल्लहं लहइ बोहिं बुज्झइ तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंत करेति।

व्या० प्र० शत० ७ उ० १ सू० २६४

विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥

दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेणं तवस्सिविसुद्धेण तिक-

रणसुद्धेणं पडिगाहसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेण। व्या० प्र० शत० १५ सू० ५४१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
सप्तमोऽध्याय समाप्त ।

अष्टमोऽध्यायः

मिथ्यादर्शनाऽविरतिप्रमादकषाय-योगा बन्धहेतवः ॥१॥

पंच आसवदारा पण्णत्ता, तं जहा-मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा। समवा० समय ५

सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्धः ॥२॥

जोगबंधे कसायबंधे। समवा० समवाय ५

दोहिं ठाणेहि पापकम्मा बंधंति, तं जहा-रागेण य दोसेण य। रागे दुविहे पण्णत्ते, त जहा-माया

य लोभे य। दोसे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-कोहे य माणे य।

स्था० स्थान २ उ० २

प्रज्ञापना पद २३ सू० ५

प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥

चउव्विहे बन्धे पण्णत्ते, तं जहा—पगइबंधे ठिइबन्धे अणुभावबन्धे पएसबन्धे।

समवायांग समवाय ४

आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ॥४॥

अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, वेदणिज्जं, मोहणिज्जं, आउयं, नामं, गोयं, अंतराइयं।

प्रज्ञापना पद २१ उ० १ सू० २८८

पञ्चनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ॥५॥

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानाम् ॥६॥

पंचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे सुयणाणावरणिज्जे, ओहिणाणावरणिज्जे, मणपज्जवणाणावरणिज्जे केवलणाणावरणिज्जे ।

स्थानाग स्थान ५ उ० ३ सू० ४६४

चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥

णवविधे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा-निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला थीणगिद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे, अवधिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे ।

स्थानांग स्थान ९ सू० ६६८

सदसद्वेद्ये ॥८॥

सातावेदणिज्जे य असायावेदणिज्जे य ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सू० २९३

दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्री-

पुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ॥९॥

मोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पएणत्ते ? गोयमा ! दुविहे पएणत्ते, तं जहा-दंमणमोहणिज्जे य चरित्तमोहणिज्जे य। दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पएणत्ते ? गोयमा ! तिविहे पएणत्ते, त जहा-सम्मत्तवेदणिज्जे, मिच्छत्तवेदणिज्जे, सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जे।

चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पएणत्ते ? गोयमा ! दुविहे पएणत्ते, तं जहा-कसायवेदणिज्जे नोकसायवेदणिज्जे।

कसायवेदणिज्जे ण भंते ! कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पएणत्ते, त जहा-अण-

ताणुबंधीकोहे अणंताणुबंधी माणे अ० माया अ० लोभे, अपच्चक्खाणे कोहे एव माणे माया लोभे, पच्चक्खणावरणे कोहे एवं माणे माया लोभे संजलणकोहे एवं माणे माया लोभे।

नोकसायवेयणिज्जे ण भंते ! कम्मे कतिविधे पण्णत्ते ?

गोयमा ! णवविधे पण्णत्ते, त जहा–इत्थीवेयवेयणिज्जे, पुरिसवे० नपुसगवे० हासे रती अरती भए सोगे दुगुछा।

प्रज्ञा० कर्मबन्ध० २३ उ० २

नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ॥१०॥

आउएण भते ! कम्मे कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउविहे पण्णत्ते, तं जहा–णेरइयाउए, तिरियआउए, मणुस्साउए, देवाउए।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २

गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्वं च॥११॥

णामेणं भंते ! कम्मे कतिविहे पएणत्ते ? गोयमा ! बायालीसतिविहे पएणत्ते, त जहा–१ गतिणामे, २ जातिणामे, ३ सरीरणामे, ४ सरीरोवंगणामे, ५ सरीरबंधणणामे, ६ सरीरसंघयणणामे, ७ संघायणणामे, ८ संठाणणामे, ९ वएणणामे, १० गंधणामे, ११ रसणामे, १२ फासणामे, १३ अगुरुलघुणामे,

१४ उवघायणामे, १५ पराघायणामे, १६ आणुपुव्वी-णामे, १७ उस्सासणामे, १८ आयवणामे, १९ उज्जो-यणामे, २० विहायगनिणामे, २१ तसणामे, २२ थावरणामे, २३ सुहुमणामे, २४ बादरणामे, २५ पज्जत्तणामे, २६ अपज्जत्तणामे, २७ साहारणस-रीरणामे, २८ पत्तेयसरीरणामे, २९ थिरणामे, ३० अथिरणामे, ३१ सुभणामे, ३२ असुभणामे, ३३ सुभगणामे, ३४ दुभगणामे, ३५ सूसरणामे, ३६ दूसरणामे, ३७ आदेज्जणामे, ३८ अणादेज्जणामे, ३९ जसोकित्तिणामे, ४० अजसोकित्तिणामे, ४१ णिम्माणणामे, ४२ तित्थगरणामे ।

प्रज्ञापना उ० २ पद २३ सू० २९३

समवायांग० स्थान ४२

उच्चैर्नीचैश्च ॥१२॥

गोए णं भंते ! कम्मे कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा !

दुविहे पराणत्ते, तं जहा–उच्चागोए य नीयागोए य ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सू० २६३

दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ॥१३॥

अंतराए णं भंते ! कम्मे कतिविधे पराणत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पराणत्ते, तं जहा–दाणंतराइए, लाभंतराइए, भोगंतराइए, उवभोगंतराइए, वीरियतराइए ।

प्रज्ञापना पद २३ उद्दे० २ सूत्र २६३

आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः ॥१४॥

उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडीओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥

आवरणिज्जाण दुण्हंपि, वेयणिज्जे तहेव य।
अन्तराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥

उत्तराध्ययन अध्ययन ३३

सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥

उदहीसरिसनामाण, सत्तरिं कोडिकोडीओ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तराध्ययन अध्ययन ३३ गाथा २१

विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥१६॥

उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडीओ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तराध्ययन अध्य० ३३ गाथा २३

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ॥१७॥

तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया।
ठिइ उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा २२

अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ॥१८॥

सातावेदणिज्जस्स जहन्नेणं बारसमुहुत्ता।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सू० २९३

नामगोत्रयोरष्टौ ॥१९॥

नामगोयआणं जहण्णेणं अट्ठमुहुत्ता।

भगवतीसूत्र शतक ६ उ० ३ सू० २३६

जसोकित्तिनामाएणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण अट्ठमुहुत्ता। उच्चगोयस्स पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं अट्ठमुहुत्ता।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सूत्र २९४

शेषाणामन्तर्मुहूर्ताः ॥२०॥

अन्तोमुहुत्तं जहन्निया।

उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा १९–२२

विपाकोऽनुभवः ॥२१॥

स यथानाम ॥२२॥

अणुभागफलविवागा। समवायाग विपाकश्रुत वर्णन
सव्वेसिं च कम्माण।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २

उत्तराध्ययन अ० २३ गाथा १७

ततश्च निर्जरा ॥२३॥

उदीरिया वेइया य निज्जिण्णा।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शत० १ उ० १ सू० ११

नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ॥२४॥

सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्गमणन्तग।
गण्ठियसत्ताईयं अन्तो सिद्धाण आउयं॥

सव्वजीवाण कम्म तु, संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥

उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा १७-१८

सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥२५॥

अतोऽन्यत्पापम् ॥२६॥

सायावेदणिज्ज तिरिआउए मणुस्साउए देवाउए, सुहणामस्सणं उच्चागोत्तस्स असाया वेदणिज्ज इत्यादि ।

प्रज्ञापना सूत्र पद २३ उ० १

एगे पुराणे एगे पावे । स्थानांग स्थान १ सूत्र १६

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
अष्टमोऽध्याय समाप्त ।

नवमोऽध्यायः
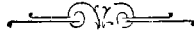
आस्रवनिरोधः संवरः ॥१॥

निरुद्धासवे (सवरो) ।

एगे * सवरे ।

स्थाना० स्था० १ उत्तराध्ययन अ० २६ सूत्र ११

स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः ॥२॥

तपसा निर्जरा च ॥३॥

---

* संव्रियते कर्मकारण प्राणातिपातादि निरुध्यत येन परिणामेन स सवर आश्रवनिरोध इत्यर्थ । इति वृत्तिकार ॥

समई गुत्ती धम्मो अणुपेह परीसहा चरित्तं च ।
सत्तावन्नं भेया पणतिगभेयाइं संवरणे ॥

स्थानांग वृत्ति स्थान १

एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसञ्चियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥

उत्तराध्ययन अ० ३० गाथा ६

सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥४॥

गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ।

उत्तराध्ययन अ० २४ गाथा २६

ईर्याभाषैषणाऽऽदाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥५॥

पञ्च समिईओ पण्णत्ता, तं जहा—ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडमत्तनिक्खे-

वणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठा-वणियासमिई । समवायांग समवाय ५

उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥

दसविहे समणधम्मे पराणत्ते, तं जहा—१ खन्ती, २ मुत्ती, ३ अज्जवे, ४ मद्दवे, ५ लाघवे, ६ सच्चे, ७ सजमे, ८ तवे, ९ चियाए, १० बंभचेरवासे ।

समवायांग समवाय १०

अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ७

१ अणिच्चाणुप्पेहा, २ असरणाणुप्पेहा, ३ एग-त्ताणुप्पेहा, ४ संसाराणुप्पेहा ।

स्थानांग स्थान ४ उ० १ सू० २४७

अण्णत्ते [अणुप्पेहा] ५—अन्ने खलु णाति-संजोगा अन्नो अहमंसि । असुइअणुप्पेहा ६ ।

सूत्रकृतांग श्रुतस्कंध २ अ० १ सू० १३

इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं ।
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥

उत्तराध्ययन अ० १६ गाथा १२

अवायाणुप्पेहा ७ ।

स्थानांग स्थान ४ उ० १ सू० २४७

संवरे [अणुप्पेहा] ८—

जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।
जा निस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥

उत्तराध्ययन अध्ययन २३ गाथा ७१

णिज्जरे [अणुप्पेहा] ९ ।

स्थानांग स्थान १ सू० १६

लोगे [अणुप्पेहा] १० ।

स्थानांग स्थान १ सू० ५

बोहिदुल्लहे [अणुप्पेहा] ११ ।

सबुज्झह किं न बुज्झह संबोही खलु पेच्च दुल्लहा ।
णो हूवणमंति राइओ नो सुलभ पुणरावि जीवियं ॥

सूत्रकृतांग प्रथम श्रुतस्कन्ध गाथा १

धम्मे [अणुप्पेहा] १२—

उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।

उत्तराध्ययन अ० १० गाथा १८

मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ॥८॥

नो विनिहन्नेज्जा ।

उत्तराध्ययन अ० २ प्रथम पाठ

सम्मं सहमाणस्स णिज्जरा कज्जति ।

स्थानांग स्थान ५ उ० १ सू० ४०६

क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानाऽदर्शनानि ॥९॥

बावीस परिसहा पण्णत्ता, तं जहा—१ दिगिंछापरीसहे, २ पिवासापरीसहे, ३ सीतपरीसहे, ४ उसिणपरीसहे, ५ दंसमसगपरीसहे, ६ अचेलपरीसहे, ७ अरइपरीसहे, ८ इत्थीपरीसहे, ९ चरिआपरीसहे, १० निसीहियापरीसहे, ११ सिज्जापरीसहे, १२ अक्कोसपरीसहे, १३ वहपरीसहे, १४ जायणापरीसहे, १५ अलाभपरीसहे, १६ रोगपरीसहे, १७ तणफासपरीसहे, १८ जल्लपरीसहे, १९ सक्कारपुरक्कारपरीसहे, २० पण्णापरीसहे, २१ अण्णाणपरीसहे, २२ दंसणपरीसहे।

सूक्ष्मसाम्परायछद्मस्थवीतरागयो-
श्चतुर्दश ॥१०॥

एकादश जिने ॥११॥

बादरसाम्पराये सर्वे ॥१२॥

ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥

दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥

चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्या-
क्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ॥१५॥

वेदनीये शेषाः ॥१६॥

एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नै-कोनविंशतेः ॥१७॥

नाणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, तं जहा—पन्नापरीसहे नाणपरीसहे य । वेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एक्कारसपरीसहा समोयरंति, तं जहा—

पचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा वहे य रोगे य ।
तणफास जल्लमेव य, एक्कारस वेदणिज्जंमि ॥१॥

दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ । चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! सत्तपरीसहा समोयरंति, तं जहा—

अरती अचेल इत्थी निसीहिया जायणा य अक्कोसे।
सक्कारपुरक्कारे चरित्तमोहम्मि सत्ते ते ॥१॥

अंतराइए णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ। सत्तविहबंधगस्स णं भंते ! कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, वीसं पुण वेदेइ, जं समयं सीयपरीसहं वेदेति णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ णो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेति णो तं समयं निसीहियापरीसहं वेदेति जं समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ णो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ।

अट्ठविहबंधगस्स णं भंते ! कतिपरीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा– छुहापरीसहे पिवासापरीसहे सीयप० दंसप०

मसगप० जाव अलाभप० एवं अट्ठविहबंधगस्स वि सत्तविहबंधगस्स वि ।

छव्विहबंधगस्स णं भंते ! सरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चोद्दस परीसहा पण्णत्ता । बारस पुण वेदेइ । जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ । जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ । जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ णो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ । जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति णो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ।

एक्कविहबंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एवं चेव जहेव छव्विहबंधगस्स णं । एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेदेइ, सेसं जहा छव्विहबंधगस्स ।

अबंधगस्स णं भंते ! अजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पराणत्ता ? गोयमा ! एकारस्स परीसहा पराणत्ता, नव पुण वेदेइ । जं समयं सीयपरीसहं वेदेति नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ । जं समयं उसिणपरीसहं वेदेति नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ । जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति । जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ । व्याख्या प्रज्ञप्ति श० ८ उ० ८ सू० ३४३

सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्पराययथाख्यातमिति चारित्रम् ॥१८॥

सामाइयत्थ पढमं, छेदोवट्ठावणं भवे बीयं ।
परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च ॥३२॥

अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
एवं चयरित्तकर, चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥

उत्तराध्ययन अ० २८ गाथा ३२-३३

अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥१९॥

बाहिरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–अणसण ऊणोयरिया भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ । कायकिलेसो पडिसंलीणया वज्झो (तवो होई) ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति शत० २५ उ० ७ सू० ८०२

प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥२०॥

अब्भिंतरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–

पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ, झाण विउसग्गो ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

नवचतुर्दशपंचद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥२१॥

आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः २२

दसविधे पायच्छित्ते पराणत्ते. त जहा–आलोअणारिहे पडिकम्मणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउसग्गारिहे तवारिहे छेदारिहे मूलारिहे अणवट्ठप्पारिहे ।

स्थानाग स्थान ६ सू० ६८८

ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥२३॥

विणए सत्तविहे पराणत्ते, त जहा–णाणविणए

दंसणविणए चरित्तविणए मणविणए वइविणए कायविणए लोगोवयारविणए ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानाम् ॥२४॥

वेयावच्चे दसविहे पराणत्ते, त जहा—आयरियवेआवच्चे उवज्झायवेआवच्चे सेहवेआवच्चे गिलाणवेआवच्चे तवस्सिवेआवच्चे थेरवेआवच्चे साहम्मिअ वेआवच्चे कुलवेआवच्चे गणवेआवच्चे संघवेआवच्चे ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥२५॥

सज्झाए पंचविहे पगणत्ते, तं जहा–वायणा पडि-पुच्छणा, परिअट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥२६॥

विउसग्गे दुविहे पगणत्ते, तं जहा–दव्वविउसग्गे य भावविउसग्गे य।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्त्तात् ॥२७॥

केवतियं कालं अवट्ठियपारिणामे होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अन्तमुहुत्तं।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ६ सू० ७७०

अंतोमुहुत्तमित्तं चित्तावत्थाणमेगवत्थुम्मि।
छउमत्थाणं झाणं जोगनिरोहो जिणाण तु॥

स्थानाग वृत्ति० स्थान ४ उ० १ सू० २४७

आर्त्तरौद्रधर्मशुक्लानि ॥२८॥

चत्तारि झाणा पण्णत्ता, त जहा-अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

परे मोक्षहेतुः ॥२९॥

धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए।

उत्तराध्ययन अ० ३० गाथा ३५

आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥३०॥

अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-अमणुन्नसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोग सति समन्नागए यावि भवइ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

विपरीतं मनोज्ञस्य ॥३१॥

मणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओग सति समराणागते यावि भवति ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

वेदनायाश्च ॥३२॥

आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओग सति समराणागए यावि भवति ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

निदानञ्च ॥३३॥

परिजुसितकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओग सति समराणागए यावि भवइ ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ॥३४॥

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिये ।
धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहावए ॥

उत्तराध्ययन अध्ययन ३० गाथा ३५

हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥३५॥

रोद्दज्झाणे चउव्विहे पगणत्ते, तं जहा–हिंसाणुबंधी मोसाणुबंधी तेयाणुबंधी सारक्खणाणुबंधी ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ ७ सू० ८०३

आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम् ॥३६॥

धम्मे झाणे चउव्विहे पगणत्ते, तं जहा–आणाविजए, अवायविजए, विवागविजए, संठाणविजए ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥३७॥

सुहमसंपरायसरागचरित्तारिया य बायरसंपरायसरागचरित्तारिया य, उवसन्तकसायवीयरायचरित्तारिया य खीणकसाय वीयरायचरित्तारिया य।

प्रज्ञापना सूत्र पद १ चारित्रार्यविषय

परे केवलिनः ॥३८॥

सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य।

प्रज्ञापनासूत्र पद १ चारित्रार्यविषय

पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्त्तीनि ॥३९॥

सुक्के झाणे चउव्विहे पराणत्ते, त जहा—१ पुहुत्तवितक्के सवियारी, २ एगत्तवितक्के अवियारी,

३ सुहुमकिरिते अणियट्टी, ४ समुच्छिन्नकिरिए अप्पडिवाती ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम् ॥४०॥

सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य बायरसंपरायसरागचरित्तारिया य, उवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया य खीणकसायवीयरायचरित्तारिया य ।

सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य ।

प्रज्ञापना सूत्र पद १ चारित्रार्यविषय

एकाश्रये सवितर्कविचारे पूर्वे ॥४१॥

अविचारं द्वितीयम् ॥४२॥

वितर्कः श्रुतम् ॥४३॥

विचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः ४४

उप्पायठितिभगाईं पज्जयाणं जमेगदव्वंमि ।
नाणानयाणुसरणं पुव्वगयसुयाणुसारेणं ॥१॥
सवियारमत्थवंजणजोगंतरओ तयं पढमसुक्कं ।
होति पुहुत्तवियक्कं सवियारमरागभावस्स ॥२॥
जं पुण सुनिप्पकंपं निवायसरणप्पईवमिव चित्तं ।
उप्पायठिइभंगाइयाणमेगंमि पज्जाए ॥३॥
अवियारमत्थवंजणजोगंतरओ तय बिइयसुक्कं ।
पुव्वगयसुयालंबणमेगत्तवियक्कमवियारं ॥४॥

स्थानांग सूत्र वृत्ति स्था० ४ उ० १ सू० २४७

सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽ-

संख्येयगुणनिर्जराः ॥४५॥

कम्मविसोहिमग्गणं पडुच्च चउद्स जीवट्ठाणा पराणत्ता, तं जहा- अविरयसम्मदिट्ठी विरया-विरए पमत्तसजए अप्पमत्तसंजए निअट्टीबायरे अनिअट्टिबायरे सुहुमसंपराए उवसामए वा खवए वा उवसंतमोहे खीणमोहे सजोगी केवली अजोगी केवली।

समवायाग समवाय १४

पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ॥४६॥

पंच णियंठा पन्नत्ता, तं जहा-पुलाए बउसे कुसीले णियंठे सिणाए।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ५ सू० ७५१

संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ॥४७॥

पडिसेवणा णाणे तित्थे लिंग-खेत्ते काल गइ संजम लेसा ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ५ सू० ७५१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
नवमोऽध्याय समाप्त ।

दशमोऽध्यायः

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम् ॥१॥

खीणमोहस्स णं अरहओ तनो कम्मंसा जुगवं खिज्जंति, त जहा–नाणावरणिज्जं दसणावरणिज्ज अतराति यं ।

स्थानाग स्थान ३ उ० ४ सू० २२६

तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठवीसइविहं मोहणिज्ज कम्मं उग्घाएइ, पंचविहं नाणावरणिज्ज, नवविहं दंसणावरणिज्जं, पंचविहं अन्तराइयं, एए तिन्नि वि कम्मसे जुगवं खवेइ ।

उत्तराध्ययन अध्ययन २६ सू० ७१

बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ॥२॥

अणगारे समुच्छिन्नकिरिय अनियट्टिसुक्कज्झाण झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगव खवेइ ।

उत्तराध्ययन अध्ययन २६ सूत्र ७२

औपशमिकादिभव्यत्वानाञ्च ॥३॥

नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए ।

प्रज्ञापना पद १८

अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥४॥

* खीणमोहे (केवलसम्मत्त) केवलणाणी,

* सिद्धा सम्मदिट्ठी (सिद्धा सम्यग्दृष्टि) प्रज्ञापना १९ सम्यक्त्व पद

केवलदंसी सिद्धे ।

अनुयोगद्वारसूत्र षण्णामाधिकार सू० १२६

तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात्
॥५॥

अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपगडीओ खवेत्ता गगण-तलमुप्पइत्ता उप्पि लोयग्गपतिट्ठाणा भवन्ति ।

ज्ञाताधर्मकथाग अध्ययन ६ सू० ६२

पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बंधच्छेदात्तथा-गतिपरिणामाच्च ॥६॥

आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपा-लाबुवदेरण्डबीजवदग्निशिखावच्च ॥७॥

अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पन्नायति ? हंता अत्थि, कहन्नं भंते ! अकम्मस्स गती पन्नायति ?

गोयमा ! निस्सगयाए निरगणयाए गतिपरिणामेण बंधणछेयणयाए निरंधणयाए पुव्वपओगेणं अकम्मस्स गती पन्नत्ता। कहण्णं भंते ! निस्सगयाए निरगणयाए गइपरिणामेणं बंधणछेयणयाए निरंधणयाए पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पन्नायति? से जहानामए, केई पुरिसे सुक्कं तुबं निच्छिड्डु निरुवहय आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे २ दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ २ अट्ठहिं मट्टियालेवेहि लिंपइ २ उण्हे दलयति भूतिं २ सुक्कं समाण अत्थाहमतारमपोरसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा! से तुंबे तेसिं अट्ठण्ह मट्टियालेवेणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुसभारियत्ताए सलिलतलमतिवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ? हंता भवइ, अहे ण से तुंबे अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं परिक्खएणं धरणितलमतिवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ? हंता भवइ, एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए निरगणयाए

गइपरिणामेण अकम्मस्स गई पन्नायति। कहन्नं भंते ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गई पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए—कलसिंबलियाइ वा मुग्गसिंबलियाइ वा माससिंबलियाइ वा सिंबलिसिंबलियाइ वा एरंडमिंजियाइ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी फुडित्ता णं एगतमंतं गच्छइ, एवं खलु गोयमा ! ०। कहन्नं भंते ! निरंधणयाए अकम्मस्स गती ? गोयमा ! से जहानामए—धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं, गती पवत्तति, एवं खलु गोयमा ! ०। कहन्नं भंते ! पुव्वपओगेणं अकम्मस्स गती पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए—कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तइ, एवं खलु गोयमा ! नीसंगयाए निरंगणयाए जाव पुव्वपओगेणं अकम्मस्स गती पण्णत्ता ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ७ उ० १ सू० २६५

धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा य पोग्गला य णो संचाते‍ति बहिया लोगंता गमणताते, तं जहा—गतिअभावेणं णिरुवग्गहताते लुक्खताते लोगाणुभावेणं।

स्थानाग स्थान ४ उ० ३ सू० ३३७

क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥९॥

खेत्तकालगईलिङ्गतित्थे चरित्ते।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ६ सू० ७५१

पत्तेयबुद्धसिद्धा बुद्धबोहियसिद्धा।

नन्दिसूत्र केवलज्ञानाधिकार

नाणे खेत्त अन्तर अप्पाबहुयं।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ६ सू० ७५१

सिद्धाणोगाहणा संख्या ।

उत्तराध्ययन अध्ययन ३६ गाथा ५३

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-

संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये

दशमोऽध्यायः समाप्त ।

गुरुप्पसत्थी

नायसुओ वद्धमाणो नायसुओ महामुणी ।
लोगे तित्थयरो आसी अपच्छिमो सिवंकरो ॥१

सतित्थे ठविओ तेण पढमो अणुसासगो ।
सुहम्मो गणहरो नाम तेअंसी समणच्चिओ ॥२॥

तत्तो पवट्टिओ गच्छो सोहम्मो नाम विस्सुओ ।
परंपराए तत्थासी सूरी चामरसिंघओ ॥३॥

तस्स सतस्स दन्तस्स मोतीरामाभिहो मुणी ।
होत्थ सीसो महापन्नो गणिपयविभूसिओ ॥४॥

तस्स पट्टे महाथेरो गणावच्छेअगो गुणी ।
गणपतिसन्निओ साहू सामण्णगुणसोहिओ ॥५॥

तस्स सीसो गुरुभत्तो सो जयरामदासओ ।
गणावच्छेअगो अत्थि समो मुत्तो व्व सासणे ॥६॥

तस्स सीसो सद्धसंधो पवट्टगपयंकिओ ।
सालिग्गामो महाभिक्खू पावयणी धुरंधरो ॥७॥
तस्संतेवासिणा भिक्खुअप्पारामेण निम्मिओ ।
उवज्झायपयंकेण तत्तत्थस्स समन्नओ ॥८॥
तत्तत्थमूलसुत्तस्स जं बीअ उवलब्भइ ।
जिणागमेसु तं सव्वं संखेवेणेत्थ दसिअ ॥९॥
इगूणवीसानवइ विक्कमवासेसु निम्मिओ एस ।
दिल्लीनामयनयरे मुक्ख सत्थस्स य समन्नयो ॥१०॥

परिशिष्ट† नं० १
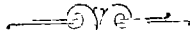
तादिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥

तत्र 'नोइंदियअत्थावग्गहो' त्ति नोइन्द्रियं मनः, तच्च द्विधा द्रव्यरूपं भावरूपं च, तत्र मनःपर्याप्तिनामकर्मोदयतो यत् मनःप्रायोग्यवर्गणादलिकमादाय मनस्त्वेन परिणामितं तद्द्रव्यरूपं मनः, तथा चाह चूर्णिकृत्–"मणपज्जत्तिनामकम्मोदयओ तज्जोग्गे मणोदव्वे घेत्तुं मणत्तेण परिणामिया दव्वा दव्वमणो भण्णइ।" तथा द्रव्यमनोऽवष्टम्भेन जीवस्य यो मननपरिणामः स भावमनः, तथा चाह चूर्णि-

† इस परिशिष्ट मे वह पाठ है, जो शीघ्रता के कारण मूलग्रन्थ के छपते समय उसमे न दिये जा सके थे।

कार एव—" जीवो पुण मणणपरिणामकिरियापन्नो भावमनो, किं भणियं होइ ?—मणदव्वालंबणो जीवस्स मणणवावारो भावमणो भण्णइ " तत्रेह भावमनसा प्रयोजनं, तद्ग्रहणे ह्यवश्य द्रव्यमनसोऽपि ग्रहणं भवति, द्रव्यमनोऽन्तरेण भावमनसोऽसम्भवात्, भावमनो विनापि च द्रव्यमनो भवति, यथा भवस्थकेवलिन, तत उच्यते—भावमनसेह प्रयोजन, तत्र नोइन्द्रियेण—भावमनसाऽर्थावग्रहो द्रव्येन्द्रियव्यापारनिरपेक्षो घटाद्यर्थस्वरूपपरिभावनाभिमुख, प्रथममेकसामयिको रूपाद्यर्थाकारादिविशेषचिन्ताविकलोऽनिर्देश्यसामान्यमात्रचिन्तात्मको बोधो नोइन्द्रियार्थावग्रह. ।

नन्दिसूत्र वृत्ति मतिज्ञान वर्णन

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥

अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आवस्सयं च आवस्सयवइरित्तं च। से किं तं आवस्सयं? आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—सामाइयं चउवीसत्थवो वंदणयं पडिक्कमणं काउस्सग्गो पच्चक्खाणं, सेत्तं आवस्सयं। से किं तं आवस्सयवइरित्तं? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—कालिअं च उक्कालिअं च। से किं तं उक्कालिअं? उक्कालिअं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—दसवेआलियं कप्पिआकप्पिअं चुल्लकप्पसुअं महाकप्पसुअं उववाइअं रायपसेणिअं जीवाभिगमो पण्णवणा महापण्णवणा पमायप्पमायं नंदी अणुओगदाराइं देविंदत्थओ तंदुलवेआलिअं चंदाविज्झयं सूरपण्णत्ति पोरिसिमंडलं मंडलपवेसो विज्जाचरणविणिच्छओ गणिविज्जा झाणविभत्ती मरणविभत्ती आयविसोही वीयरागसुअं संलेहणासुअं विहारकप्पो चरणविही आउरपच्चक्खाणं महा-

पच्चक्खाण एवमाइ, से त उक्कालिअ । से किं तं कालिअं ? कालिअं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—उत्तरज्झयणाइं दसाओ कप्पो ववहारो निसीहं महानिसीह इसिभासिआइं जंबूदीवपन्नती दीवसागरपन्नत्ती चंदपन्नत्ती खुड्डिआ विमाणपविभत्ती महल्लिआ विमाणपविभत्ती अगचूलिआ वग्गचूलिया विवाहचूलिआ अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए नागपरिआवणिआओ निरयावलिआओ कप्पिआओ कप्पवडिंसिआओ पुप्पिआओ पुप्फचूलिआओ वण्हीदसाओ, एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नगसहस्साई भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स तहा सखिज्जाइ पइन्नगसहस्साई मज्झिमगाणं जिणवराणं चोद्दसपइन्नगसहस्साणि भगवओ वद्धमाणसामिस्स, अहवा जस्स जत्तिआ सीसा

उप्पत्तिआए वेणइआए कम्मियाए पारिणामिआए चउव्विहाए बुद्धीए उववेआ तस्स तत्तिआइं पइण्णगसहस्साइं, पत्तेअबुद्धावि तत्तिआ चेव, सेत्तं कालिअं, सेत्तं आवस्सयवइरित्तं, से तं अणंगपविट्ठं ।

नन्दी सूत्र ४४

संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥

जीवा णं भंते ! किं सण्णी असण्णी नोसण्णी-नोअसण्णी ? गोयमा ! जीवा सण्णीवि असण्णीवि नोसण्णीनोअसण्णीवि । नेरइयाणं पुच्छा ? गो-यमा ! नेरइया सण्णीवि असण्णीवि नो नोसण्णी-नोअसण्णी, एवं असुरकुमारा जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! नो सण्णी असण्णी, नो नोसण्णीनोअसण्णी । एवं बेइंदि-यतेइंदियचउरिंदियावि । मणूसा जहा जीवा,

पंचिंदियतिरिक्खजोणिया वाणमंतरा य जहा नेरइया, जोतिसियवेमाणिया सण्णी नो असण्णी नो नोसण्णीनोअसण्णी। सिद्धाण पुच्छा? गोयमा! नो सण्णी नो असण्णी नोसण्णीनोअसण्णी। नेरइयतिरियमणुया य वणयरगसुरा इ सण्णीऽसण्णी य। विगलिंदिया असण्णी जोतिसवेमाणिया सण्णी। पण्णवणाए सण्णीपयं समत्तं।

प्रज्ञापना ३१ संज्ञापद सूत्र ३१५

सर्वस्य-त० सू० अ० २ सू० ४२

तेया सरीर जहा ओरालियं णावर।

सव्व जीवाण भाणितव्व एवं कम्मग सरीरपि॥

व्या श० १६ उ० १०॥

परिशिष्ट नं० १ (शेषभाग)

निम्नलिखित पाठ पृष्ठ १७६ अ० ८ सूत्र २४ के साथ सम्बन्ध रखता है

कतिणं भंते कम्म पगडीओ पएणत्ताओ, गोयमा! अट्ठ कम्म पगडीओ पएणत्ताओ तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइय। नेरइयाणं, भंते? कइ कम्म पगडीओ पएणत्ताओ गोयमा–अट्ठ एवं सव्वजीवाणं अट्ठ कम्म पगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाणं नाणावरणिज्जस्स णं भते कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पएणत्ता गोयमा अणंता अविभागपलिच्छेदा पएणत्ता नेरइयाण भंते नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवितया अविभाग पलिच्छेदा पएणत्ता गोयमा अणंता अविभागपलिच्छेदा पएणत्ता एवं सव्व जीवाणं जाव वेमाणियाणं पुच्छा गोयमा

अणंता अविभागपलिच्छेदा पएणत्ता एवं जहा नाणा-
वरणिज्जस्स अविभाग पलिच्छेदा भणिया तहा
अट्ठएहवि कम्म पगडीणं भाणियव्वा जाव वेमाणि-
याण अंतराइयस्स एगमेगस्स णं भते जीवस्स
एगमेगे जीवपएसे णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स
केवइएहिं अविभाग पलिच्छेदेहि आवेढिए परिवे-
ढिए सिया गोयमा सिए आवेढिय परिवेढिए सिय
नो आवेढिय परिवेढिए जइ आवेढिय परिवेढिए
नियमा अणंतेहि एगमेगस्सण भते नेरइयस्स एग-
मेगे जीव पएसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइ-
एहि अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिए परिवेढिते
गोयमा नियमा अणतेहि जहा नेरइयस्स एव जाव
वेमाणियस्स नवरं मणूसस्स जहा जीवस्स ! एग
मेगस्स ण ! भंते जीवस्स ! एगमेगे ! जीव पएसे !
दरिसणावरणिज्जिस्स ! कम्मस्स ! केवतिएहि !
एवं ! जहेव ! नाणावरणिज्जस्स ! तहेव दडगो !

भाणियव्वो ! जाव ! वेमाणियस्स एव ! जाव ! अंतराइयस्स ! भाणियव्व नवर वेयणिज्जस्स ! आउयस्स ! णामस्स गोयस्स ! एएसिं ! चउण्ह-वि ! कम्माण मणूसस्स जहा ! नेरइयस्स ! तहा ! भाणियव्व ! सेसत ! चेव ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ८ उद्देश १० सू० ३५६

निम्नलिखित पाठ पृष्ठ २०० अध्याय ६ सूत्र ४७ के साथ सम्बन्ध रखता है

१ पगणवण २ वेद ३ रागे ४ कप्प ५ चरित्त ६ पडिसेवणा ७ णाणे ८ तित्थे ९ लिग १० सरीरे ११ खेत्त १२ काल १३ गइ १४ सजम १५ निगासे ॥१॥ १६ जोगु १७ वयोग १८ कसाए १९ लेसा २० परिणाम २१ बंध २२ वेदय २३ कम्मोदीरण २४ उवसपजहन्न २५ सन्नाय २६ आहारे ॥२॥ २७ भव २८ आगरिसे २९ काल ३० आहारे ३१ समुग्घाय

३२ खेत्त ३३ फुसणा य ३४ भावे ३५ परिणामे ३६ विय अप्पाबहुअ (य) ३७ नियंठाणं ॥३॥

निम्नलिखित पाठ पृष्ठ ५६ तृतीयाध्याय प्रथम सूत्र के साथ सम्बन्ध रखता है

अहोलोगेण सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ। सत्त-घणोदहीओ पण्णत्ताओ सत्त घणवायाओ प०। सत्त तणुवाया प०। सत्त उवासंतरा। प० एएसुण सत्तसु उवासतरे सु सत्त तणुवाया पइट्ठिया। एएसुण सत्तसु तणुवाएसु सत्त घण वाया पइट्ठिया, सत्तसु घणवाए सु सत्त घणोदही पइट्ठिया, एए सुण सत्तसु घणोदही सु पिंडलग पिहुल सठाण सठियाओ सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ त-जहा पढमा जाव सत्तमा। एयासिण सत्तण्हं पुढ-वीण सत्तणाम धेज्जा पण्णत्ता तजहा घम्मा वसा सेला अंजणा रिट्ठा मघा माघवई। एयासिण सत्तण्ह पुढवीण सत्त गोत्ता पण्णत्ता तंजहा रयणप्पभा

सक्करप्पभा वालुयप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमा तमतमा ।

ठाणांग सूत्र, ठाणा ७

निम्नलिखित पाठ पहिला अध्याय पृष्ठ २८ की अन्तिम पंक्तियों के साथ सम्बन्ध रखता है ।

अविसेसिआ मइ मइ नाणञ्च । मइ अन्नाणं च॥ विसेसिआ सम्मद्दिट्ठिस्स मई । मइ नाणं । मिच्छा-दिट्ठिस्स । मइ मइ अन्नाण अविसेसि अ सुय सुय-नाण च सुय अन्नाणं च विसेसि अ सुय सम्मद्दि-ट्ठिस्स सुय सुअनाण मिच्छादिट्ठिस्स सुय सुय अन्नाण ॥

नन्दीसूत्र सूत्र २४ ॥

निम्नलिखित पाठ अध्याय २ सूत्र ५३ पृ० ५७ मे सम्बन्ध रखता है ।

नेरइयाण भंते ! कइया भागावसेसाउया पर-भविआउय पकरेंति ? गोयमा ! नियमा छम्मासा-

वसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? एवं असुर-कुमाराचि जाव थणियकुमारा ॥ पुढविकाइयाण भंते ! कइया भागा वसेसाउया परभवियाउय पकरेंति ? गोयमा ! पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता ? तं जहा सोवक्कमाउयाय निरुवक्कमाउयाय, तत्थणं जेते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागा वसेसाउया परभवियाउय पकरेंति ॥ तत्थण जेते सोवक्कमा उया तेण सियं ति भागा वसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, सियतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सियतिभागतिभागतिभागा-वसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, आउतेउवाउ वणस्सइ काइयाण बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणवि एव चेव ॥

पंचेंदियय तिरिक्खजोणियाण भंते ! कइभागा वसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, ? गोयमा ! पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा

संखिज्ज वासाउयाय असंखिज्जवासाउयाय ॥ तत्थणं जेते असखेज्जवासाउया ते नियमा छम्मासावसेसा-उया परभवियाउयं पकरेति तत्थणं जेते संखिज्ज वासाउयते दुविहा पण्णत्ता त जहा सोवक्कमाउ आय निरुवक्कमाउआय तत्थण जेते निरुवक्कमाउ-अयाय ते नियमा तिभागवसेसाउया परभवियाउयं पकरेति ॥ तत्थण तेते सोवक्कमाउया तेणं सियति भागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेति, सिय ति-भागासियतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेति, सियतिभागतिभागतिभागावसेसाउया पर-भवियाउयं पकरेति ॥ एव मणुस्साविवाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा नेरया ॥

पन्नवणा श्वासोश्वास पद ६ सूत्र २४ ॥

तओ अहाउय पालेंति त जहा अरहंता चक्क-वट्टी बलदेव वासुदेवा ॥

ठाणांग ३ उ० १ सू० ३४

जीवाणं भंते ! किं सोवक्कमाउया णिरुवक्कमा-उया ? गोयमा ! जीवा सोवक्कमाउयावि णिरुवक्क-माउयावि ॥१॥ णेरइयाण पुच्छा ? गोयमा ! णेर-इया णो सोवक्कमाउया, णिरुवक्कमाउयावि । एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवी काइया जहा जीवा । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा णेरइया ॥२॥

भगवती सूत्र शतक २० उ० १०

परिशिष्ट नं० २

दिगम्बरश्वेताम्बराम्नायसूत्रपाठभेदः ।

प्रथमोऽध्यायः

सूत्राङ्का दिगम्बराम्नायी सूत्रपाठ	सूत्राङ्का श्वेताम्बराम्नायी सूत्रपाठ
१५ अवग्रहेहावायधारणा	१५ अवग्रहेहापायधारणा
× × ×	२१ द्विविधोऽवधि
२१ भवप्रत्ययोवधिर्देवनारकाणाम्	२२ भवप्रत्ययो नारकदेवानाम्
२२ क्षयोपशमनिमित्त षड्विकल्प शेषाणाम्	२३ यथोक्तनिमित्त .
२३ ऋजुविपुलमती मन पर्यय	२४ . *पर्याय

* भाष्य के सूत्रों मे सर्वत्र मन पर्यय के बदले मन पर्याय पाठ है।

२५ विशुद्धक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽ- वधिमन पर्यययो	२६ . पर्याययो
२८ तदनन्तभागे मन पर्ययस्य	२९ ... पर्यायस्य
३३ नैगमसङ्ग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्द- समभिरूढैवम्भूता नया	३४ . सूत्रशब्दा नया
× × ×	३५ आद्यशब्दौ द्वित्रिभेदौ

द्वितीयोऽध्यायः

५ ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रि- पञ्चभेदा सम्यक्त्वचारित्रसय- मासयमाश्च	५ दर्शनदानादिलब्धय ...
७ जीवभव्याभव्यत्वानि च	७ भव्यत्वादीनि च
१३ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतय स्था- वरा	१३ पृथिव्यब्वनस्पतय. स्थावरा

१४ द्वीन्द्रियादयस्त्रसा.	१४ तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसा
× × ×	१६ उपयोग स्पर्शादिषु
२० स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्थाः	२१ . . ..शब्दास्तेषामर्थाः
२२ वनस्पत्यन्तानामेकम्	२३ वाय्वन्तानामेकम्
२६ एकसमयाऽविग्रहा	३० एकसमयाऽविग्रह
३० एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारक	३१ एक द्वौ वानाहारक
३१ सम्मूर्च्छनगर्भोपपादा जन्मः	३२ सम्मूर्च्छनगर्भोपपाता जन्म
३३ जरायुजाण्डजपोताना गर्भ	३४ जराय्वण्डपोतजाना गर्भ
३४ देवनारकाणामुपपाद	३५ नारकदेवानामुपपात
३७ पर परं सूक्ष्मम्	३८ तेषा पर पर सूक्ष्मम्
४० अप्रतीघाते	४१ अप्रतिघाते
४३ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्यः	४४ . . ... कस्याऽऽचतुर्भ्यः

४६ औपपादिक वैक्रियिकम्	४७ वैक्रियमौपपातिकम्
४८ तैजसमपि	× × ×
४९ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारक प्रमत्तसयतस्यैव	४९ चतुर्दश- पूर्वधरस्यैव
५२ शेषास्त्रिवेदा	× × ×
५३ औपपादिकचरमोत्तमदेहा सख्ये- यवर्षायुषोऽनपर्त्यायुष	५२ औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरुषा- संख्य...

तृतीयोऽध्याय.

१ रत्नशर्कराबालुकापङ्कधूमतमो- महातम प्रभाभूमयो घनाम्बु- वाताकाशप्रतिष्ठा सप्ताधोऽध	१ सप्ताधोऽध पृथुतरा:
२ तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदश- दशत्रिपञ्चानेकनरकशतसहस्रा-	२ तासु नरका

णि पञ्च चैव यथाक्रमम्	
३ नारका नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रिया	२ नित्याशुभतरलेश्या.
७ जम्बूद्वीपलवणोदादय शुभनामानो द्वीपसमुद्रा.	७ जम्बूद्वीपलवणादय शुभनामानो द्वीपसमुद्रा
१० भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षा क्षेत्राणि	१० तत्र भरत ... ...
१२ हेमार्ज्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममया	× ×
१३ मणिविचित्रपार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्तारा	× ×
१४ पद्ममहापद्मतिगिच्छकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषा	

मुपरि	×	×
१५ प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्ध- विष्कम्भो ह्रद	×	×
१६ दशयोजनावगाह	×	×
१७ तन्मध्ये योजन पुष्करम्	×	×
१८ तद्द्विगुणाद्विगुणा ह्रदा पुष्क- राणि च	×	×
१९ तन्निवासिन्यो देव्य श्रीह्रीधृति- कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्य पल्योपम- स्थितय ससामानिकपरिषत्का	×	×
२० गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्ध- रिकान्तासीतासीतोदानारीनर- कान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्ता-		

	दा सरितस्तन्मध्यगा	×	×
२१	द्वयोर्द्वयो पूर्वा पूर्वगा	×	×
२२	शेषास्त्वपरगा	×	×
२३	चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृत्ता गङ्गा-सिन्ध्वादयो नद्य	×	×
२४	भरत षड्विंशतिपञ्चयोजनशत विस्तार षट चैकोनविंशति-भागा योजनस्य	×	×
२५	तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्ष-धरवर्षाविदेहान्ता	×	×
२६	उत्तरा दक्षिणतुल्या	×	×
२७	भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासो षट्सम-याभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम्	×	×

२८ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिता	×	×	
२६ एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरुवका	×	×	
३० तथोत्तरा	×	×	
३१ विदेहेषु सङ्ख्येयकाला	×	×	
३२ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभाग	×	×	
३८ नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते	१७	परापरे	..
३६ तिर्यग्योनिजानाञ्च	१८ तिर्यग्योनीनाञ्च		

चतुर्थोऽध्यायः

२ आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्या		३ तृतीय पीतलेश्य
×	×	७ पीतान्तलेश्या

८	शेषा स्पर्शरूपशब्दमन प्रवा-चारा	६	. प्रवीचारद्वयोराद्वयो
१२	ज्योतिष्का सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च	१३	सूर्याश्चन्द्रमसो. ... प्रकीर्णतारकाश्च
१६	सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्र-ब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्टशुक्र-महाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्ता-पराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च	२०	सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्र-ब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रसहस्रारे . . .. . सर्वार्थसिद्धे च
२२	पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु	२३	लेश्या हि विशेषेषु
२४	ब्रह्मलोकालया लौकान्तिका	२५	.. लोकान्तिका
२५	सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोय	२६	.. .

तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च

२८ स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणा सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीन-मिता

× ×

× ×

× ×

२६ सोधर्मैशानयो सागरोपमेऽधिके

३० सानत्कुमारमाहेन्द्रयो सप्त

३१ त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि तु

व्याबाधमरुत (अरिष्टाश्च) ४

२६ स्थिति

३० भवनेसु दक्षिणार्धाधिपतीना पल्योपममध्यर्धम्

३१ शेषाणा पादोने

३२ असुरेन्द्रयो सागरोपममधिक च

३३ सौधर्मादिषु यथाक्रमम्

३४ सागरोपमे

३५ अधिके च

३६ सप्त सानत्कुमारे

३७ विशेषत्रिसप्तदशैकादशत्रयोदश-पञ्चदशभिरधिकानि च

३३ अपरा पल्योपमधिकम्

३६ परा पल्योपमधिकम्

४० ज्योतिष्काणा च

४१ तदष्टभागोऽपरा

× ×

४२ लौकान्तिकानामष्टौ सागरोप-
माणि सर्वेषाम्

३६ अपरा पल्योपममधिक च

४० सागरोपमे

४१ अधिके च

४७ परा पल्योपमम्

४८ ज्योतिष्काणामधिकम्

४६ ग्रहाणामेकम्

५० नक्षत्राणामर्द्धम्

५१ तारकाणा चतुर्भाग

५२ जघन्या त्वष्टभाग

५३ चतुर्भाग शेषाणाम्

× ×

पञ्चमोऽध्यायः

२	द्रव्याणि	२	द्रव्याणि जीवाश्च
३	जीवाश्च	×	×
८	असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम्	७	असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मयो
×	×	८	जीवस्य च
१६	प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत्	१६	. विसर्गाभ्याम्
२६	भेदसङ्घातेभ्य उत्पद्यन्ते	२६	सङ्घातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते
२९	सद्द्रव्यलक्षणम्	×	×
३७	बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च	३६	बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ
३९	कालश्च	३८	कालश्चेत्येके
×	×	४२	अनादिरादिमांश्च
×	×	४३	रूपिष्वादिमान्
×	×	४४	योगोपयोगौ जीवेषु

षष्ठोऽध्यायः

३ शुभ पुण्यस्याशुभ पापस्य	३ शुभ पुण्यस्य
	४ अशुभपापस्य
५ इन्द्रियकषायाव्रतक्रिया पञ्चचतु पञ्चपञ्चविंशतिसङ्ख्या पूर्वस्य भेदा	६ अव्रतकषायेन्द्रियक्रिया × ×
६ तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेष	७ × भाववीर्याधिकरणविशेषे—
१७ अल्पारम्भपरिग्रहत्व मानुषस्य	१८ अल्पारम्भपरिग्रहत्व स्वभावमार्दव च मानुषस्य
१८ स्वभावमार्दव च	× ×
२१ सम्यक्त्व च	× ×
२३ तद्विपरीत शुभस्य	२२ विपरीत शुभस्य
२४ दर्शनविशुद्धिविनयसम्पन्नता शी	. ...

लव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णज्ञानोप-		. ऽभीक्ष्ण ...
योगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी		सङ्घसाधुसमाधिवैयावृत्त्यकरण
साधुसमाधिर्वैयावृत्त्यकरणमर्हदा-	. .	... . .
चार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यका-	..	..
परिहाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचन-	...	...
वत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य		तीर्थकृत्त्वस्य

सप्तमोऽध्यायः

४ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणासमि-	×	×
त्यालोकितपानभोजनानि पञ्च		
५ क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्या-	×	×
नान्यनुवीचिभाषणं च पञ्च		
६ शून्यागारविमोचितावासपरोपरो-	×	×
धाकरणभैक्ष्यशुद्धिसधर्माविसं-		

	वादा पञ्च			
७	स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्ग-निरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागा पञ्च		×	×
८	मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पञ्च		×	×
६	हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम्	४	हिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शनम्	
१२	जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थम्	७	जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम्	
२८	परिविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीतागमनानङ्गक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशा	२३	परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीता	. ..
३२	कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्या	२७	कन्दर्पकौकुच्य	...

धिकरणापभोगपरिभागानर्थक्या नि	णापभोगाधिकत्वानि
३४ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादान सस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुप- स्थानानि	२६ . सस्तारो नुपस्थापनानि
३७ जीवितमरणाशसामित्रानुराग- सुखानुबधनिदानानि	३२ . निदानकारणानि

अष्टमोऽध्यायः

२ सकषायत्वाज्जीव कर्म्मणो योग्या न्पुद्गलानादत्ते स बन्ध	२ .. . पुद्गलानादत्ते
× ×	३ स बन्ध
४ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीय- मोहनीयायुर्नामगोत्रान्तराया	५ . मोहनीयायुष्कनाम

६ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवला
नाम्

७ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलाना निद्रा
निद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचला
स्त्यानगृद्धयश्च

६ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायाकषा-
यवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदा
सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकऽ
षायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभ
यजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अन
न्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान
सञ्ज्वलनविकल्पाश्चैकश क्रोधमा
नमायालोभा

७ मत्यादीनाम्

८ . . . . .
.
स्त्यानगृद्धिवेदनीयानि च

१० मोहनीयकषायनोकषाय
द्विषोडशनव
तदुभयानि कषायनोकषायाव-
नन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्या-
नावरणसञ्ज्वलनविकल्पाश्चैकश
क्रोधमानमायालोभा हास्यरत्य-
रतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसक
वेदा

१३	दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम्	१४	दानादीनाम्
१६	विंशतिर्नामगोत्रयोः	१७	नामगोत्रयोर्विंशतिः
१७	त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष	१८	युष्कस्य
१९	शेषाणामन्तर्मुहूर्ता	२१ .	मुहूर्तम्
२४	नामप्रत्यया सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः	२५	क्षेत्रावगाहस्थिता
२५	सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम्	२६	सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुषवेदशुभायु
२६	अतोऽन्यत्पापम्	×	×

नवमोऽध्यायः

६	उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्या-	६	उत्तम क्षमा ...

	णि धर्म		
१७	एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकान्नविंशति	१७	विंशते
१८	सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्पराययथाख्यातमिति चारित्रम्	१८	छेदोपस्थाप्य ... यथाख्यातानि चारित्रम्
२२	आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापना	२२	... स्थापनानि
२७	उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात्	२७	निरोधो ध्यानम्
	× ×	२८	आमुहूर्तात्
३०	आर्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगेत	३१	आर्तममनोज्ञाना

द्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहार	... ..
३१ विपरीत मनोज्ञस्य	३३ विपरीत मनोज्ञानाम्
३६ आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम्	३७ . धर्ममप्रमत्तसंयतस्य
× ×	३८ उपशान्तक्षीणकषाययोश्च
३७ शुक्के चाद्ये पूर्वविद	३९ शुक्ले चाद्य
४० त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम्	४२ तत्र्येककाययोगायोगानाम्
४१ एकाश्रय सवितर्कविचारे पूर्वे	४३ .. सवितर्के पूर्वे

दशमोऽध्यायः

२ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्या कृत्स्न-कर्मविप्रमोक्षो मोक्ष	२ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्या
× ×	३ कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्ष
३ औपशमिकादिभव्यत्वाना च	४ औपशमकादिभव्यत्वाभावाच्चा-

		न्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन-सिद्धत्वेभ्य		
४	अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन सिद्धत्वेभ्य		×	×
६	पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बन्धच्छेदा-त्तथागतिपरिणामाच्च	६ . ... परिणामाच्च तद्गति		
७	आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगत-लेपालाबुवदेरण्डबीजवदग्निशि-खावच्च		×	×
८	धर्मास्तिकायाभावात्		×	×

———

तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय

हिन्दी भाषानुवाद सहित

यह जो पुस्तक आपके हाथों में है इसका एक अलग संस्करण हिन्दी अनुवाद सहित भी छपा हुआ है। अनुवादक है—जैन संसार के धुरन्धर विद्वान्, साहित्यरत्न, जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज। भाषानुवाद बड़ा सरल और विस्तृत है। प्राकृत के साथ संस्कृत छाया भी दे दी गई है। टीका के सम्बन्ध मे विशेष प्रशंसा की आवश्यकता नहीं। टीकाकार मुनि जी का नाम मात्र ही पर्याप्त है।   मूल्य २) डाकव्यय अलग छपाई बढ़िया बड़े मोटे टायप में हुई है।

वर्द्धमान चरित्र

भगवान् महावीर स्वामी

का

सरल हिन्दी भाषा मे

जीवन चरित्र

मूल्य सजिल्द ।||)   अजिल्द ||)

मिलने का पता—

मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास जैन

बुकसेलर, सैदमिट्ठा बाज़ार,

लाहौर